इकाई-IV

13. पानी की कहानी

-रामचंद्र तिवारी

प्रस्तावना प्रसंग–

सावन, भादो साधु हो गए,
बादल सब संन्यासी।
पछुआ चूस गई पुरबा को,
धरती रह गई प्यासी।

फसलों ने बैराग ले लिया
जोगी हो गई धानी,
राम जाने कब बरसेगा पानी।

- बेकल उत्साही

प्रश्न

1. इन पंक्तियों में कैसे समय का वर्णन है?
2. अकाल में लोगों को क्या-क्या समस्याएँ होती होंगी?
3. पानी हमलोगों तक कैसे पहुँचता है?

मैं आगे बढ़ा ही था कि बेर की झाड़ी पर से मोती-सी एक बूँद मेरे हाथ पर आ पड़ी । मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब मैंने देखा कि ओस की बूँद मेरी कलाई पर से सरककर हथेली पर आ गई। मेरी दृष्टि पड़ते ही वह ठहर गई। थोड़ी देर में मुझे सितार के तारों की-सी झंकार सुनाई देने लगी। मैंने सोचा कि कोई बजा रहा होगा। चारों ओर देखा। कोई नहीं। फिर अनुभव हुआ कि यह स्वर मेरी हथेली से निकल रहा है। ध्यान से देखने पर मालूम हुआ कि बूँद के दो कण हो गए हैं और वे दोनों हिल-हिलकर यह स्वर उत्पन्न कर रहे हैं मानो बोल रहे हों।

उसी सुरीली आवाज़ में मैंने सुना-"सुनो, सुनो...।"

मैं चुप था।

फिर आवाज़ आई, "सुनो, सुनो।"

अब मुझसे न रहा गया। मेरे मुख से निकल गया, "कहो, कहो।"

ओस की बूँद मानो प्रसन्नता से हिली और बोली-"मैं ओस हूँ।"

"जानता हूँ"-मैंने कहा।

"लोग मुझे पानी कहते हैं, जल भी।"

"मालूम है।"

"मैं बेर के पेड़ में से आई हूँ।"

"झूठी," मैने कहा और सोचा, 'बेर के पेड़ से क्या पानी का फव्वारा निकलता है'?

बूँद फिर हिली। मानो मेरे अविश्वास से उसे दुख हुआ हो।

"सुनो। मैं इस पेड़ के पास की भूमि में बहुत दिनों से इधर-उधर घूम रही थी। मैं कणों का हृदय टटोलती फिरती थी कि एकाएक पकड़ी गई।"

"कैसे," मैंने पूछा।

"वह जो पेड़ तुम देखते हो न वह ऊपर ही इतना बड़ा नहीं है, पृथ्वी में भी लगभग इतना ही बड़ा है। उसकी बड़ी जड़ें, छोटी जड़ें और जड़ों के रोएँ हैं। वे रोएँ बड़े निर्दयी होते हैं। मुझ जैसे असंख्य जल-कणों को वे बलपूर्वक पृथ्वी में से खींच लेते हैं। कुछ को तो पेड़ एकदम खा जाते हैं और अधिकांश का सब कुछ छीनकर उन्हें बाहर निकाल देते हैं।"

क्रोध और घृणा से उसका शरीर काँप उठा।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

"तुम क्या समझते हो कि वे इतने बड़े यों ही खड़े हैं। उन्हें इतना बड़ा बनाने के लिए मेरे असंख्य बंधुओं ने अपने प्राण-नाश किए हैं।" मैं बड़े ध्यान से उसकी कहानी सुन रहा था।

"हाँ तो मैं भूमि के खनिजों को अपने शरीर में घुलाकर आनंद से फिर रही थी कि दुर्भाग्यवश एक रोएँ से मेरा शरीर छू गया। मैं काँपी। दूर भागने का प्रयत्न किया परंतु वे पकड़कर छोड़ना नहीं जानते। मैं रोएँ में खींच ली गई।"

"फिर क्या हुआ?" मैंने पूछा। मेरी उत्सुकता बढ़ चली थी।

"मैं एक कठोरी में बंद कर दी गई। थोड़ी देर बाद ऐसा जान पड़ा कि कोई मुझे पीछे से धक्का दे रहा है और कोई मानो हाथ पकड़कर आगे को खींच रहा हो। मेरा एक भाई भी वहाँ लाया गया। उसके लिए स्थान बनाने के कारण मुझे दबाया जा रहा था। आगे एक और बूँद मेरा हाथ पकड़कर ऊपर खींच रही थी। मैं उन दोनों के बीच पिस चली।"

"मैं लगभग तीन दिन तक यह साँसत भोगती रही। मैं पत्तों के नन्हें-नन्हें छेदों से होकर जैसे-तैसे जान बचाकर भागी। मैंने सोचा था कि पत्ते पर पहुँचते ही उड़ जाऊँगी। परंतु, बाहर निकलने पर ज्ञात हुआ कि रात होनेवाली थी और सूर्य जो हमें उड़ने की शक्ति देते हैं, जा चुके हैं, और वायुमंडल में इतने जल कण उड़ रहे हैं कि मेरे लिए वहाँ स्थान नहीं है तो मैं अपने भाग्य पर भरोसा कर पत्तों पर ही सिकुड़ी पड़ी रही। अभी जब तुम्हें देखा तो जान में जान आई और रक्षा पाने के लिए तुम्हारे हाथ पर कूद पड़ी।"

इस दुख तथा भावपूर्ण कहानी का मुझ पर बड़ा प्रभाव पड़ा। मैंने कहा- "जब तक तुम मेरे पास हो कोई पत्ता तुम्हें न छू सकेगा।"

"भैया, तुम्हें इसके लिए धन्यवाद है। मैं जब तक सूर्य न निकले तभी तक रक्षा चाहती हूँ। उनका दर्शन करते ही मुझमें उड़ने की शक्ति आ जाएगी। मेरा जीवन विचित्र घटनाओं से परिपूर्ण है। मैं उसकी कहानी तुम्हें सुनाऊँगी तो तुम्हारा हाथ तनिक भी न दुखेगा।"

"अच्छा सुनाओ।"

"बहुत दिन हुए, मेरे पुरखे हद्रजन (हाइड्रोजन) और ओषजन (ऑक्सीजन) नामक दो गैसें सूर्यमंडल में लपटों के रूप में विद्यमान थीं।"

"सूर्यमंडल अपने निश्चित मार्ग पर चक्कर काट रहा था। वे दिन थे जब हमारे ब्रह्मांड में उथल-पुथल हो रही थी। अनेक ग्रह और उपग्रह बन रहे थे।"

"ठहरो, क्या तुम्हारे पुरखे अब सूर्यमंडल में नहीं हैं"

"हैं, उनके वंशज अपनी भयावह लपटों से अब भी उनका मुख उज्जवल किए हुए हैं। हाँ, तो मेरे पुरखे बड़ी प्रसन्नता से सूर्य के धरातल पर नाचते रहते थे। एक दिन की बात है कि दूर एक प्रचंड प्रकाश- पिंड दिखाई पड़ा। उनकी आँखे चौंधियाने लगीं। यह पिंड बड़ी तेज़ी से सूर्य की ओर बढ़ रहा था। ज्यों-ज्यों पास आता जाता था, उसका आकार बढ़ता जाता था। यह सूर्य से लाखों गुना बड़ा था। उसकी महान आकर्षण-शक्ति से हमारा सूर्य काँप उठा। ऐसा ज्ञात हुआ कि उस ग्रहराज

© SCERT not to be republished

से टकराकर हमारा सूर्य चूर्ण हो जाएगा। वैसा न हुआ। वह सूर्य से सहस्रों मील दूर से ही घूम चला, परंतु उसकी भीषण आकर्षण-शक्ति के कारण सूर्य का एक भाग टूटकर उसके पीछे चला। सूर्य से टूटा हुआ भाग इतना भारी खिंचाव सँभाल न सका और कई टुकड़ों में टूट गया। उन्हीं में से एक टुकड़ा हमारी पृथ्वी है। यह प्रारंभ में एक बड़ा आग का गोला थी।"

"ऐसा? परंतु उन लपटों से तुम पानी कैसे बनी।"

"मुझे ठीक पता नहीं। हाँ, यह सही है कि हमारा ग्रह ठंडा होता चला गया और मुझे याद है कि अरबों वर्ष पहले मैं हद्रजन और ओषजन के रासायनिक क्रिया के कारण उत्पन्न हुई हूँ। उन्होंने आपस में मिलकर अपना प्रत्यक्ष अस्तित्व गँवा दिया है और मुझे उत्पन्न किया है। मैं उन दिनों भाप के रूप में पृथ्वी के चारों ओर घूमती फिरती थी। उसके बाद न जाने क्या हुआ? जब मुझे होश आया तो मैंने अपने को ठोस बर्फ़ के रूप में पाया। मेरा शरीर पहले भाप-रूप में था वह अब अत्यंत छोटा हो गया था। वह पहले से कोई सतरहवाँ भाग रह गया था। मैंने देखा मेरे चारों ओर मेरे असंख्य साथी बर्फ़ बने पड़े थे। जहाँ तक दृष्टि जाती थी बर्फ़ के अतिरिक्त कुछ दिखाई न पड़ता था। जिस समय हमारे ऊपर सूर्य की किरणें पड़ती थीं तो सौंदर्य बिखर पड़ता था। हमारे कितने साथी ऐसे भी थे जो बड़ी उत्सुकता से आँधी में ऊँचा उड़ने, उछलने-कूदने के लिए कमर कसे तैयार बैठे रहते थे।"

"बड़े आनंद का समय रहा होगा वहाँ।"

"बड़े आनंद का।"

"कितने दिनों तक?"

"कई लाख वर्षों तक?"

"कई लाख!"

"हाँ, चौंको नहीं। मेरे जीवन में सौ-दो सौ वर्ष दाल में नमक के सामान भी नहीं हैं।"

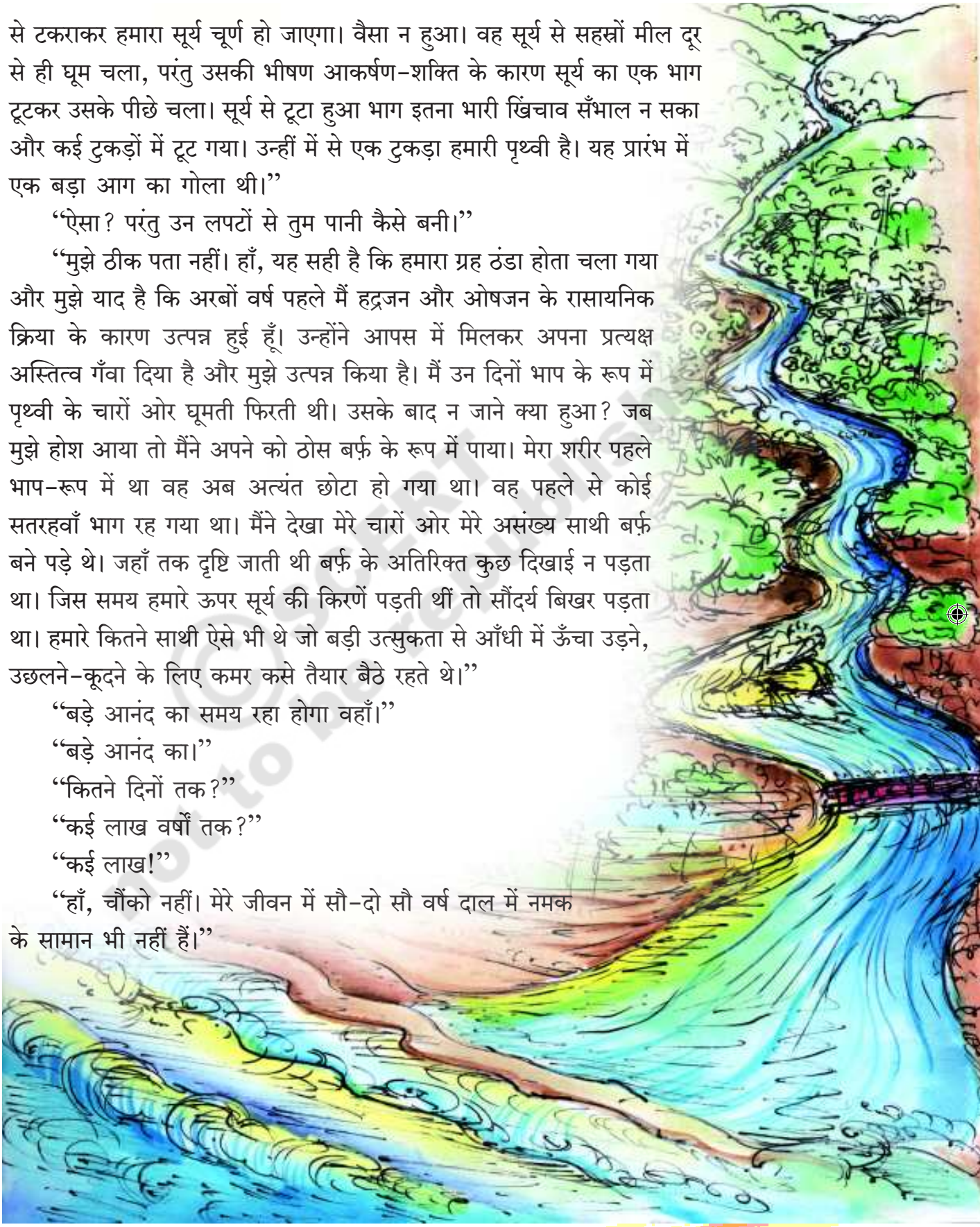

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

मैंने ऐसे दीर्घजीवी से वार्तालाप करते जान अपने को धन्य माना और ओस की बूँद के प्रति मेरी श्रद्धा बढ़ चली।

"हम शांति से बैठे एक दिन हवा से खेलने की कहानियाँ सुन रहे थे कि अचानक ऐसा अनुभव हुआ मानो हम सरक रहे हों। सबके मुख पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। अब क्या होगा?

इतने दिन आनंद से काटने के पश्चात् अब दुख सहन करने का साहस हममे न था। बहुत पता लगाने पर हमें ज्ञात हुआ कि हमारे भार से ही हमारे नीचेवाले भाई दबकर पानी हो गए हैं। उनका शरीर ठोसपन को छोड़ चुका है और उनके तरल शरीर पर हम फिसल चले हैं।

मैं कई मास समुद्र में इधर-उधर घूमती रही। फिर एक दिन गर्म-धारा से भेंट हो गई। धारा के जलते अस्तित्व को ठंडक पहुँचाने के लिए हमने उसकी गरमी सोखनी प्रारंभ कर दी और इसके फलस्वरूप मैं पिघल पड़ी और पानी बनकर समुद्र में मिल गई।

समुद्र का भाग बनकर मैंने जो दृश्य देखा वह वर्णनातीत है। मैं अभी तक समझती थी कि समुद्र में केवल मेरे बंधु-बांधवों का ही राज्य है, परंतु अब ज्ञात हुआ कि समुद्र में चहल-पहल वास्तव में दूसरे ही जीवों की है और उसमें निरा नमक भरा है। पहले-पहल समुद्र का खारापन मुझे बिलकुल नहीं भाया, जी मचलाने लगा। पर धीरे-धीरे सब सहन हो चला।

एक दिन मेरे जी में आया कि मैं समुद्र के ऊपर तो बहुत घूम चुकी हूँ, भीतर चलकर भी देखना चाहिए कि क्या है? इस कार्य के लिए मैंने गहरे जाना प्रारंभ कर दिया।

मार्ग में मैंने विचित्र-विचित्र जीव देखे। मैंने अत्यंत धीरे-धीरे रेंगने वाले घोंघे, जालीदार मछलियाँ, कई-कई मन भारी कछुवे और हाथोंवाली मछलियाँ देखीं। एक मछली ऐसी देखी जो मनुष्य से कई गुना लंबी थी। उसके आठ हाथ थे। वह इन हाथों से अपने शिकार को जकड़ लेती थी।

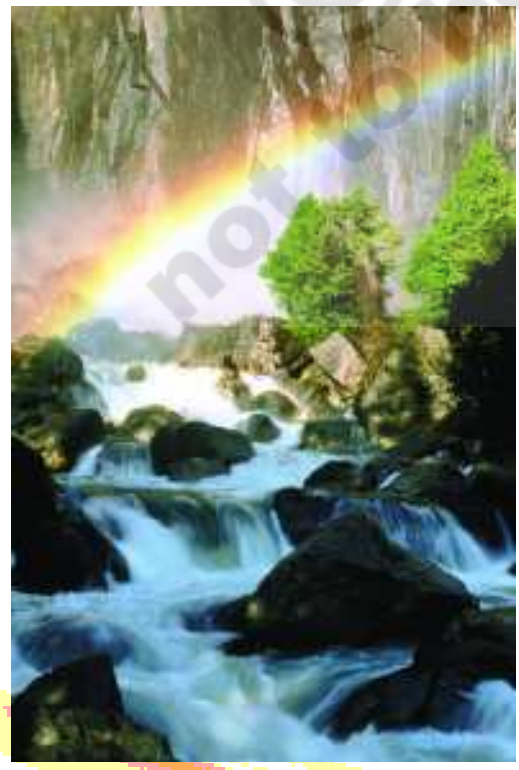

" मैं और गहराई की खोज में किनारों से दूर गई तो मैंने एक ऐसी वस्तु देखी कि मैं चौंक पड़ी। अब तक समुद्र में अँधेरा था, सूर्य का प्रकाश कुछ ही भीतर तक पहुँच पाता था और बल लगाकर देखने के कारण मेरे नेत्र दुखने लगे थे। मैं सोच रही थी कि यहाँ पर जीवों को कैसे दिखाई पड़ता होगा कि सामने ऐसा जीव दिखाई पड़ा मानो कोई लालटेन लिए घूम रहा हो। यह एक अत्यंत सुंदर मछली थी। इसके शरीर से एक प्रकार की चमक निकलती थी जो इसे मार्ग दिखलाती थी। इसका प्रकाश देखकर कितनी छोटी-छोटी अनजान मछलियाँ इसके पास आ जाती थीं और यह जब भूखी होती थी तो पेट भर उनका भोजन करती थी।"

© SCERT not to be republished

" विचित्र है!"

" जब मैं और नीचे समुद्र की गहरी तह में पहुँची तो देखा कि वहाँ भी जंगल है। छोटे ठिंगने, मोटे पत्ते वाले पेड़ बहुतायत से उगे हुए हैं। वहाँ पर पहाड़ियाँ हैं, घाटियाँ हैं। इन पहाड़ियों की गुफाओं में नाना प्रकार के जीव रहते हैं जो निपट अँधे तथा महा आलसी हैं।

यह सब देखने में मुझे कई वर्ष लगे। जी में आया कि ऊपर लौट चलें। परंतु प्रयत्न करने पर जान पड़ा कि यह असंभव है। मेरे ऊपर पानी की कोई तीन मील मोटी तह थी। मैं भूमि में घुसकर जान बचाने की चेष्टा करने लगी। यह मेरे लिए कोई नयी बात न थी। करोड़ों जल-कण इसी भाँति अपनी जान बचाते हैं और समुद्र का जल नीचे धँसता जाता है।

मैं अपने दूसरे भाइयों के पीछे-पीछे चट्टान में घुस गई। कई वर्षों में कई मील मोटी चट्टान में घुसकर हम पृथ्वी के भीतर एक खोखले स्थान में निकले और एक स्थान पर इकट्ठा होकर हम लोगों ने सोचा कि क्या करना चाहिए। कुछ की सम्मति में वहीं पड़ा रहना ठीक था। परंतु हममें कुछ उत्साही युवा भी थे। वे एक स्वर में बोले-हम खोज करेंगे, पृथ्वी के हृदय में घूम-घूम कर देखेंगे कि भीतर क्या छिपा हुआ है।"

"अब हम शोर मचाते हुए आगे बढ़े तो एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ ठोस वस्तु का नाम भी न था। बड़ी-बड़ी चट्टानें लाल-पीली पड़ी थीं और नाना प्रकार की धातुएँ इधर-उधर बहने को उतावली हो रही थीं।

इसी स्थान के आस-पास एक दुर्घटना होते-होते बची। हम लोग अपनी इस खोज से इतने प्रसन्न थे कि अंधा-धुँध बिना मार्ग देखे बढ़े जाते थे। इससे अचानक एक ऐसी जगह जा पहुँचे जहाँ तापक्रम बहुत ऊँचा था। यह हमारे लिए असह्य था। हमारे अगुवा काँपे और देखते-देखते उनका शरीर ओषजन और हद्रजन में विभाजित हो गया। इस दुर्घटना से मेरे कान खड़े हो गए। मैं अपने और बुद्धिमान साथियों के साथ एक ओर निकल भागी।

हम लोग अब एक ऐसे स्थान पर पहुँचे जहाँ पृथ्वी का गर्भ रह-रहकर हिल रहा था। एक बड़े ज़ोर का धड़ाका हुआ। हम बड़ी तेज़ी से बाहर फेंक दिए गए। हम ऊँचे आकाश में उड़ चले। इस दुर्घटना से हम चौंक पड़े थे। पीछे देखने से ज्ञात हुआ कि पृथ्वी फट गई है और उसमें धुआँ, रेत, पिघली धातुएँ तथा लपटें निकल रही हैं। यह दृश्य बड़ा ही शानदार था और इसे देखने की हमें बार-बार इच्छा होने लगी।"

"मैं समझ गया। तुम ज्वालामुखी की बात कह रही हो।"

"हाँ, तुम लोग उसे ज्वालामुखी कहते हो। अब जब हम ऊपर पहुँचे तो हमें एक और भाप का बड़ा दल मिला। हम गरजकर आपस में मिले और आगे बढ़े। पुरानी सहेली आँधी के भी हमें यहाँ दर्शन हुए। वह हमें पीठ पर लादे कभी इधर ले जाती कभी उधर। वह दिन बड़े आनंद के थे। हम आकाश में स्वच्छंद किलोलें करते फिरते थे।

बहुत से भाप जल-कणों के मिलने के कारण हम भारी हो चले और नीचे झुक आए और एक दिन बूँद बनकर नीचे कूद पड़े।"

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

"मैं एक पहाड़ पर गिरी और अपने साथियों के साथ मैली-कुचैली हो एक ओर को बह चली। पहाड़ों में एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूदने और किलकारी मारने में जो आनंद आया वह भूला नहीं जा सकता।

हम एक बार बड़ी ऊँची शिखर पर से कूदे और नीचे एक चट्टान पर गिरे। बेचारा पत्थर हमारे प्रहार से टूटकर खंड-खंड हो गया। यह जो तुम इतनी रेत देखते हो पत्थरों को चबा-चबा कर हमीं बनाते हैं। जिस समय हम मौज में आते हैं तो कठोर से कठोर वस्तु हमारा प्रहार सहन नहीं कर सकती।

अपनी विजयों से उन्मत्त होकर हम लोग इधर-उधर बिखर गए। मेरी इच्छा बहुत दिनों से समतल भूमि देखने की थी इसलिए मैं एक छोटी धारा में मिल गई।

सरिता के वे दिवस बड़े मजे के थे। हम कभी भूमि को काटते, कभी पेड़ों को खोखला कर उन्हें गिरा देते। बहते-बहते मैं एक दिन एक नगर के पास पहुँची। मैंने देखा कि नदी के तट पर एक ऊँची मीनार में से कुछ काली-काली हवा निकल रही है। मैं उत्सुक हो उसे देखने को क्या बढ़ी कि अपने हाथों दुर्भाग्य को न्यौता दिया। ज्योंही मैं उसके पास पहुँची अपने और साथियों के साथ एक मोटे नल में खींच ली गई। कई दिनों तक मैं नल-नल घूमती फिरी। मैं प्रति क्षण उसमें से निकल भागने की चेष्टा में लगी रहती थी। भाग्य मेरे साथ था। बस, एक दिन रात के समय मैं ऐसे स्थान पर पहुँची जहाँ नल टूटा हुआ था। मैं तुरंत उसमें होकर निकल भागी और पृथ्वी में समा गई। अंदर ही अंदर घूमते-घूमते इस बेर के पेड़ के पास पहुँची।"

वह रुकी, सूर्य निकल आए थे।

"बस? मैंने कहा।"

"हाँ, मैं अब तुम्हारे पास नहीं ठहर सकती। सूर्य निकल आए हैं। तुम मुझे रोककर नहीं रख सकते।"

वह ओस की बूँद धीरे-धीरे घटी और आँखों से ओझल हो गई।

-रामचंद्र तिवारी

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. अन्य पदार्थों के समान जल की भी तीन अवस्थाएँ होती हैं। अन्य पदार्थों से जल की इन तीन अवस्थाओं में विशेष अंतर होता है कि जल की तरल अवस्था की तुलना में ठोस अवस्था (बर्फ) हल्की होती है। इसके कारण पर चर्चा कीजिए।
2. यदि आपको मौका दिया जाये तो आप किस प्रदेश में (पर्वतीय/मैदानी भाग/समुद्र तटीय प्रदेश) रहना पसंद करेंगे? क्यों? अपने मित्रों के उत्तर भी जानिए।

पढ़िए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. लेखक को ओस की बूँद कहाँ मिली?
2. ओस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी?
3. हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज/पुरखा क्यों कहा?
4. पानी की कहानी के आधार पर पानी के जन्म और जीवन-यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
5. कहानी के अंत और आरंभ के हिस्से को स्वयं पढ़कर देखिए और बताइए कि ओस की बूँद लेखक को आपबीती सुनाते हुए किसकी प्रतीक्षा कर रही थी?

लिखिए

I. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. समुद्र के तट पर बसे नगरों में अधिक ठंड और अधिक गर्मी क्यों नहीं पड़ती?
2. जल, इंसान के लिए कभी-कभी खतरा भी बन जाता है। ऐसी परिस्थिति कब और क्यों आती है? लिखिए।

II. नीचे दिए गए प्रश्न का उत्तर कम से कम दस वाक्यों में लिखिए।

1. जल को प्रकृति एवं जीवन का संरक्षक कहा जा सकता है। जल हमारे लिए किस प्रकार उपयोगी है?
2. प्रकृति का प्रत्येक तत्व एक-दूसरे पर आधारित है। सिद्ध करते हुए अपने विचार लिखिए।

शब्द भंडार

1. 'पानी' का साधारण अर्थ जल होता है। किन्तु जिस प्रकार पानी का जीवन में अत्यंत महत्व है, उसी प्रकार भाषा में भी इस शब्द का प्रयोग अनेक अर्थों में होता है। इससे संबंधित अनेक मुहावरे भी है। इनमें से कुछ नीचे दिए जा रहे हैं। इनका वाक्य प्रयोग कीजिए।

पानी-पानी होना = शर्मा जाना
पानी के मोल = बहुत सस्ता
पानी पर नींव होना = टिकाऊ न होना
पानी फेरना = चौपट कर देना
पानी में आग लगाना = असंभव कार्य कर डालना

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

भाषा की बात

किसी भी **क्रिया** को पूरी करने में जो संज्ञा आदि शब्द संलग्न होते हैं, वे अपनी अलग-अलग भूमिकाओं के अनुसार अलग-अलग **कारकों** में वाक्य में दिखाई पड़ते हैं; जैसे- वह हाथों से शिकार को जकड़ लेती थी। 'जकड़ना' क्रिया तभी संपन्न हो पायेगी जब कोई व्यक्ति **(वह)** जकड़नेवाला हो, कोई वस्तु **(शिकार)** हो, जिसे जकड़ा जाये। इन भूमिकाओं की प्रकृति अलग-अलग है। व्याकरण में ये भूमिकाएँ कारकों के अलग-अलग भेदों, जैसे- कर्ता, कर्म, करण आदि से स्पष्ट होती हैं। अपनी पाठ्यपुस्तक से इस प्रकार के पाँच और उदाहरण खोजकर लिखिए और उन्हें भलीभाँति परिभाषित कीजिए।

प्रशंसा

जल का जीवन में अत्यधिक महत्व है। कहा जाता है- जल ही जीवन है, जल जीवन का आधार है। जल संरक्षण के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

'पानी की कहानी' पाठ में ओस की बूँद अपनी कहानी स्वयं सुना रही है और लेखक केवल श्रोता है। इस आत्मकथात्मक शैली में आप भी किसी वस्तु का चुनाव करके कहानी लिखिए।

परियोजना कार्य

अपने आसपास के भूगर्भ जल स्तर का पता लगाइए। अपने घर के बुजुर्गों से पूछिए कि उनके समय पर यह जल स्तर कितना था? इसके कारणों का पता लगाइए और लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता हूँ।		
4. जल का महत्व व उसके संरक्षण के उपाय बता सकता हूँ।		
5. परिचित वस्तु की आत्मकथा लिखने का प्रयास कर सकता हूँ।		

© NCERT not to be republished

इकाई-IV

14. हमारा संकल्प

प्रस्तावना प्रसंग–

जगह–जगह हरियाली होगी।
तब ही तो खुशहाली होगी।
फल–फूलों की डाली होगी।
भारत–भूमि निराली होगी।

प्रश्न

1. हरियाली से क्या तात्पर्य है?
2. हरियाली किस प्रकार खुशहाली लाती है?
3. हरियाली बढ़ाने के लिए हम क्या कर सकते हैं?

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

पात्र :

वृक्ष : बरगद, आम, पीपल, नारियल

पशु : बंदर

बच्चे : शशांक, आकाश, दिव्या

वेशभूषा : अभिनय करने वाले पात्र अपनी वेषभूषा धारण करते समय वृक्ष विशेष के पत्ते अपने आप पर चिपका लें।

(आम, पीपल, नारियल के वृक्षों का एक साथ प्रवेश)

© Not to be republished

सभी : प्रणाम! बरगद बाबा, प्रणाम।

बरगद : खुश रहो बेटा। खूब फूलो-फलो! तुम सब चिरायु बनो!

आम : आप चिरायु होने की बात कर रहे हैं। आज तो हम सबका जीवन संकट में है। आप तो जानते हैं। वृक्ष कितनी तेजी से कट रहे हैं।

पीपल : हाँ, बाबा। यदि यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह पृथ्वी वृक्षहीन हो जायेगी। मनुष्य अपने स्वार्थ में यह भी भूल गया कि वह हमें काटकर अपना ही अहित कर रहा है।

नारियल : बाबा! मैं भी कई दिनों से इस चिन्ता में डूबा हुआ हूँ। इसीलिए तो हम सब मिलकर आप के पास आये हैं।

बरगद : बेटा! मेरी इन विशाल जटाओं ने मानव की न जाने कितनी पीढ़ियाँ देखी हैं। देखते ही देखते यहाँ मनुष्य न जाने क्या से क्या हो गया। जिस देश में वृक्षों को देवता मानकर उनकी पूजा की जाती हो। उसी देश में उनपर ऐसे अत्याचार।

पीपल : लेकिन बाबा, मुझे आश्चर्य तो इस बात का है कि हम वृक्ष इनके लिए इतने उपयोगी हैं, फिर भी ये हमें काटने में ज़रा भी नहीं झिझकते। ज़रा यह भी नहीं सोचते कि हम इनके जीवन रक्षक हैं।

आम : हाँ बाबा, अब तो हमारा अस्तित्व ही खतरे में है। तुरंत ही इसका कोई समाधान सोचना चाहिए।

(एक बंदर का खों-खों करते हुए प्रवेश)

बंदर : बरगद बाबा! बरगद बाबा! हमें रहने का स्थान दो।

बरगद : क्या हुआ बेटा? तुम इतने घबराये हुए क्यों हो?

बंदर : बाबा! वनों में मनुष्य द्वारा पेड़ काटे जा रहे हैं। हम पशु-पक्षियों पर बड़ा संकट आ पड़ा है। सभी चिंतित हैं कि यदि वृक्ष नहीं रहे तो हम क्या खायेंगे? हम कहाँ रहेंगे?

आम, पीपल और नारियल (एक साथ) : बाबा देखा आपने, मनुष्य ने सारे प्राणी-जगत में त्राहि-त्राहि मचा दी है।

बरगद : मेरे बच्चो! थोड़ा धैर्य रखो। यदि मनुष्य की यही आदत बनी रही तो शीघ्र ही मनुष्य जाति के समक्ष गहन संकट की स्थिति खड़ी हो जायेगी। तब वह स्वयं वृक्षों के महत्व को समझेगा।

(आपस में बात करते हुए तीन बच्चों का प्रवेश। उन्हें आते हुए देख वृक्ष चुप हो जाते हैं।)

शशांक : ओफ! कितनी गर्मी है। धूल और धुएँ से मेरा दम घुटा जा रहा है। जहाँ देखो, वहाँ मोटर, स्कूटर, गाड़ियों का धुआँ और शोर।

दिव्या : (बरगद के पेड़ के पास जाकर) आओ भैया! इस बरगद के नीचे बैठें। कितनी ठंडक हैं इसकी छाया में।

आकाश : सचमुच, अब जाकर शांति मिली। इसीलिए तो आजकल जगह-जगह लिखा रहता है- पेड़ लगाइए और अपने वातावरण को हरा-भरा और शुद्ध बनाइए।

दिव्या : मुझे तो हरे-भरे पेड़-पौधे, बाग-बगीचे बहुत अच्छे लगते हैं। मैंने अपने आँगन में भी अमरूद, निंबू, गुलाब और चमेली लगा रखे हैं।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

आकाश : हमारे घर के आसपास भी सड़क के किनारे आम, नीम, पीपल के पेड़ लगे हुए हैं। मेरे दादाजी तो नीम की ही दातुन करते हैं। वे कहते हैं कि नीम का वृक्ष बड़ा गुणकारी है।

शशांक : हमारे मुहल्ले में एक वर्षों पुराना नीम का पेड़ था। लेकिन अभी कुछ दिन पूर्व जब मैं मामा के घर से लौटा तो देखा– नीम का पेड़ कटा पड़ा है। मुझे बहुत दुःख हुआ।

दिव्या : हाँ भैया! मेरी दादी जी कहती हैं कि वृक्षों में भी प्राण होते हैं। वे भी साँस लेते हैं, पानी पीते हैं। उन्हें भी भोजन चाहिए। काटने से उन्हें भी दुःख होता है।

बरगद : तुम्हारी बातें सुनकर हमने संतोष की साँस ली। अब तो हम तुम लोगों से कुछ भी आशा कर सकते हैं। आज सबके हित में यही है कि वृक्षों को काटने से रोका जाये और नये वृक्ष लगाये जायें।

आम : ज़रा सोचो बेटा! हम वृक्ष मनुष्य जाति के लिए अपने अंगों का सहर्ष दान करते हैं और उसने हमें ही काटना शुरू कर दिया। हम पर क्या गुजरती होगी?

शशांक, दिव्या आकाश (एक साथ) : आप चिन्ता न करें। हम सब बच्चे मिलकर यह संकल्प करते हैं कि आपका संदेश जन-जन तक पहुँचायेंगे।

शशांक : हम प्रण करते हैं कि वृक्षों का संरक्षण करेंगे और नये पेड़-पौधे भी लगायेंगे।

दिव्या : जंगल तो जंगल, घर-आँगन में भी पेड़-पौधे लगाकर गाँव शहरों को हरा-भरा रखेंगे।

वृक्ष और बच्चे एक स्वर में : आओ मिलकर वृक्ष लगायें।
धरती पर हरियाली लायें।
वातावरण को शुद्ध बनाकर,
जीवन में खुशहाली लायें।

(परदा गिरता है)

–साभार पंजाब शिक्षा बोर्ड

© CERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. वृक्ष मनुष्य, पशु-पक्षियों के जीवन के लिए किस प्रकार उपयोगी हैं? चर्चा कीजिए।
2. वृक्षों के संरक्षण एवं नये वृक्ष लगाने के लिए आप अपने मित्रों के साथ मिलकर चर्चा कीजिए। आपके सामने किस प्रकार की कठिनाइयाँ आ सकती हैं? चर्चा कीजिए।
3. तुम अपने घर-आँगन में कौन-कौन से पौधे लगाना पसंद करोगे और क्यों?

पढ़िए

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. सभी वृक्ष बरगद के पास क्यों गये?
2. शशांक, दिव्या, आकाश आदि बच्चों ने कहा - 'हम सब बच्चे मिलकर संकल्प करते हैं कि आपका संदेश जन-जन तक पहुँचाएँगे।' वे संदेश क्या थे?
3. 'हमारा संकल्प' पाठ से हमें क्या सीख मिलती है?

क्या-किसने कहा?

1. खुश रहो बेटा! खूब फूलो-फलो! तुम सब चिरायु बनो।
2. यदि यही हाल रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह पृथ्वी वृक्षहीन हो जायेगी।
3. हम पशु-पक्षियों पर बड़ा संकट आ पड़ा है।
4. मनुष्य ने सारे प्राणी-जगत में त्राहि-त्राहि मचा दी है।
5. ओफ! कितनी गर्मी है। धूल और धुएँ से मेरा दम घुटा जा रहा है।
6. आओ भैया! इस बरगद के नीचे बैठें। कितनी ठंडक हैं इसकी छाया में।
7. मैंने अपने आँगन में भी अमरूद, निंबू, गुलाब और चमेली लगा रखे हैं।
8. वे कहते हैं कि नीम का वृक्ष बड़ा गुणकारी है।
9. मेरी दादी जी कहती हैं कि वृक्षों में भी प्राण होते हैं।
10. अब तो हम तुम लोगों से कुछ भी आशा कर सकते हैं।

लिखिए

1. वृक्षों के तेजी से कटने के क्या कारण हो सकते हैं?
2. वृक्षों के प्रति किसकी क्या जिम्मेदारी है?
   - आप की
   - विद्यालय की
   - सरकार की
   - जनता की

© NCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

शब्द भंडार

1. ऐसे वृक्षों के नाम लिखिए जिनके पत्ते आप पहचान सकते हैं?
2. आपके विद्यालय में ऐसी कौन-कौनसी वस्तुएँ हैं, जो वृक्षों की सूखी लकड़ियों से बनी हैं?

भाषा की बात

क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। जैसे 'मारना' से 'मार', 'काटना' से 'काट', 'हारना' से 'हार', सीखना से सीख आदि भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं। नीचे दी गयी क्रियाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनाओ।

भागना से	दौड़ना से	पहचानना से .....
हड़पना से	बोलना से	मुस्कराना से .....

प्रशंसा

वृक्ष हमारे जीवन के लिए अत्यंत उपयोगी हैं। इसी प्रकार प्रकृति के अनेक तत्व हमारे लिए उपयोगी हैं। कुछ अत्यंत उपयोगी तत्वों के नाम लिखिए और आप किसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं? महत्व के अनुसार उनको क्रम दीजिए।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

वृक्षारोपण एवं वृक्षों के संरक्षण के लिए प्रेरित करते हुए कुछ नारे लिखिए।

परियोजना कार्य

किसी एक वृक्ष के पत्ते, फल, फूल, लकड़ी का टुकड़ा, उसकी छाल आदि एकत्र कीजिए और उसकी उपयोगिता के बारे में पता करके लिखिए।

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता हूँ।		
2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता हूँ।		
3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता हूँ।		
4. वृक्षों का महत्व एवं उनके संरक्षण के बारे में बता सकता हूँ।		
5. परिचित विषय संबंधी प्रेरणादायक नारों का सृजन कर सकता हूँ।		

© SCERT not to be republished

इकाई-IV

15. सूरदास के पद

प्रस्तावना प्रसंग–

चिन्तारहित खेलना–खाना, वह फिरना निर्भय स्वच्छंद।
कैसे भूला जा सकता है, बचपन का अतुलित आनंद।।

–सुभद्रा कुमारी चौहान

प्रश्न

1. यह चित्र किस त्यौहार से संबंधित है?
2. इस चित्र में बच्चे क्या कर रहे हैं?
3. कृष्ण को माखनचोर क्यों कहा जाता है?

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

(1)

मैया, कबहिं बढ़ैगी चोटी?
किती बार मोहिं दूध पियत भई, यह अजहूँ है छोटी।
तू जो कहति बल की बेनी ज्यों, ह्वै है लाँबी-मोटी।
काढ़त-गुहत न्हवावत जैहै, नागिनी सी भुइँ लोटी।
काँचौ दूध पियावत पचि-पचि, देति न माखन-रोटी।
सूर चिरजीवौ दोउ भैया, हरि-हलधर की जोटी।

(2)

तेरैं लाल मेरौ माखन खायौ।
दुपहर दिवस जानि घर सूनो ढूँढ़ि-ढँढ़ोरि आपही आयौ।
खोलि किवारि, पैठि मंदिर मैं, दूध-दही सब सखनि खवायौ।
ऊखल चढ़ि, सींके कौ लीन्हौ, अनभावत भुइँ मैं ढरकायौ।
दिन प्रति हानि होति गोरस की, यह ढोटा कौनैं ढँग लायौ।
सूर स्याम कौं हटकि न राखै तैं ही पूत अनोखौ जायौ।

© NCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. ऐसा हुआ हो कभी कि माँ के मना करने पर भी घर में उपलब्ध किसी स्वादिष्ट वस्तु को आपने चुपके-चुपके थोड़ा बहुत खा लिया हो और चोरी पकड़े जाने पर कोई बहाना भी बनाया हो। यह बहाना बनाना उचित था या अनुचित? कारण सहित बताइए।
2. कृष्ण मक्खन बड़े चाव से खाते थे। आज के बच्चे क्या खाना पसंद करते हैं? इनमें क्या लाभदायक हैं और क्या हानिकारक? चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. बालक श्रीकृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?
2. श्रीकृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या सोच रहे थे?
3. दूध की तुलना में श्रीकृष्ण कौन से खाद्य पदार्थ को अधिक पसंद करते हैं? इसका कारण क्या रहा होगा?
4. तैं ही पूत अनोखौ जायौ- पंक्ति में ग्वालन के मन के कौन से भाव मुखरित हो रहे हैं?
5. मक्खन चुराते और खाते समय श्रीकृष्ण थोड़ा सा मक्खन बिखरा क्यों देते हैं?
6. दोनों पदों में से आपको कौनसा पद अधिक अच्छा लगा और क्यों?
7. दूसरे पद को पढ़कर बताइए कि आपके अनुसार उस समय श्रीकृष्ण की उम्र क्या रही होगी?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. कृष्ण की बाललीला से सामान्य बालकों की बाललीला की तुलना कीजिए और बताइए कि उनमें क्या-क्या समानताएँ हैं?
2. सभी बच्चों को अपना बचपन बिना बोझ के जीने का अधिकार है। लेकिन कुछ ऐसे भी बच्चे हैं जिन्हें खेलने-कूदने-पढ़ने की उम्र में काम करना पड़ता है। आप जानते हैं कि बाल मज़दूरी करवाना अपराध भी है। ऐसे बच्चों के लिए आप क्या करना चाहेंगे?
3. बच्चे देश का भविष्य होते हैं। ऐसा क्यों कहा जाता है?

II. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. यदि आप श्रीकृष्ण की टोली में होते तो उनसे क्या-क्या बातें करते?
2. बालकृष्ण की विशेषताएँ बताइए।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

शब्द भंडार

1. कविता में सूर ने दुपहर शब्द का प्रयोग किया है। इस शब्द का प्रचलित रूप दोपहर है। ऐसे ही कुछ शब्द पाठ से छाँटिये और उनके प्रचलित रूप लिखिए।
2. पाठ से कोई पाँच शब्द जिसे आप कठिन मानते हैं उनका अर्थ शब्दकोश में ढूँढ़कर लिखिए।

भाषा की बात

कुछ शब्द परस्पर मिलते-जुलते अर्थवाले होते हैं, उन्हें पर्यायवाची शब्द कहते हैं। और कुछ विपरीत अर्थवाले भी। समानार्थी शब्द पर्यायवाची कहे जाते हैं और विपरीतार्थक शब्द विलोम, जैसे-

पर्यायवाची - चंद्रमा-शशि, इंदु, राका

विपरीतार्थक - दिन-रात, श्वेत-श्याम, शीत-उष्ण

पाठ में दोनों प्रकार के शब्दों को खोजकर लिखिए।

प्रशंसा

कहा जाता है कि बचपन के दिन बड़े सुहाने होते हैं। इसे जीवन का स्वर्णकाल माना गया है। ऐसा क्यों कहा गया होगा?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

सूर के पदों को संगीतबद्ध कीजिए। उनका गायन कक्षा में मित्रों की सहायता से प्रस्तुत कीजिए।

परियोजना कार्य

सूरदास के दो अन्य पदों का संकलन कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता हूँ। 4. बाल सौंदर्य के बारे में बता सकता हूँ। 5. कविताओं को संगीतबद्ध करने का प्रयत्न कर सकता हूँ।		

© SCERT not to be republished

इकाई-IV

16. बाज और साँप

–निर्मल वर्मा

प्रस्तावना प्रसंग–

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को दहलाती है।
शूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं
काँटों में राह बनाते हैं।

–रामधारी सिंह दिनकर

प्रश्न

1. विपत्ति में कौन परेशान होता है?
2. दुनिया साहसी लोगों का गुणगान क्यों करती है?
3. आप कौन-सा साहसपूर्ण कार्य करना चाहेंगे?

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

समुद्र के किनारे ऊँचे पर्वत की अँधेरी गुफा में एक साँप रहता था। समुद्र की तूफ़ानी लहरें धूप में चमकतीं, झिलमिलातीं और दिन भर पर्वत की चट्टानों से टकराती रहती थीं।

पर्वत की अँधेरी घाटियों में एक नदी भी बहती थी। अपने रास्ते पर बिखरे पत्थरों को तोड़ती, शोर मचाती हुई यह नदी बड़े ज़ोर से समुद्र की ओर लपकती जाती थी। जिस जगह पर नदी और समुद्र का मिलाप होता था, वहाँ लहरें दूध के झाग-सी सफ़ेद दिखाई देती थीं।

अपनी गुफा में बैठा हुआ साँप सब कुछ देखा करता-लहरों का गर्जन, आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, टेढ़ी-मेढ़ी बल खाती हुई नदी की गुस्से से भरी आवाज़ें। वह मन ही मन खुश होता था कि इस गर्जन-तर्जन के होते हुए भी वह सुखी और सुरक्षित है। कोई उसे दुख नहीं दे सकता। सबसे अलग, सबसे दूर, वह अपनी गुफा का स्वामी है। न किसी से लेना, न किसी से देना। दुनिया की भाग-दौड़, छीना-झपटी से वह दूर है। साँप के लिए यही सबसे बड़ा सुख था।

एक दिन एकाएक आकाश में उड़ता हुआ खून से लथपथ एक बाज साँप की उस गुफा में आ गिरा। उसकी छाती पर कितने ही ज़ख्मों के निशान थे, पंख खून से सने थे और वह अधमरा-सा ज़ोर-शोर से हाँफ रहा था। ज़मीन पर गिरते ही उसने एक दर्द भरी चीख मारी और पंखों को फड़फड़ाता हुआ धरती पर लोटने लगा। डर से साँप अपने कोने में सिकुड़ गया। किन्तु दूसरे ही क्षण उसने भाँप लिया कि बाज जीवन की अंतिम साँसें गिन रहा है और उससे डरना बेकार है। यह सोचकर उसकी हिम्मत बँधी और वह रेंगता हुआ उस घायल पक्षी के पास जा पहुँचा। उसकी तरफ़ कुछ देर तक देखता रहा, फिर मन ही मन खुश होता हुआ बोला- "क्यों भाई, इतनी जल्दी मरने की तैयारी कर ली?"

बाज ने एक लंबी आह भरी "ऐसा ही दिखता है कि आखिरी घड़ी आ पहुँची है लेकिन मुझे कोई शिकायत नहीं है। मेरी ज़िंदगी भी खूब रही भाई, जी भरकर उसे भोगा है। जब तक शरीर में ताकत रही, कोई सुख ऐसा नहीं बचा जिसे न भोगा हो। दूर-दूर तक उड़ानें भरी हैं, आकाश की असीम ऊँचाइयों को अपने पंखों से नाप आया हूँ। तुम्हारा बड़ा दुर्भाग्य है कि तुम जिंदगी भर आकाश में उड़ने का आनंद कभी नहीं उठा पाओगे।"

साँप बोला- "आकाश! आकाश को लेकर क्या मैं चाटूँगा! आकाश में आखिर रखा क्या है? क्या मैं तुम्हारे आकाश में रेंग सकता हूँ। ना भाई, तुम्हारा आकाश तुम्हें ही मुबारक, मेरे लिए तो यह गुफा भली। इतनी आरामदेह और सुरक्षित जगह और कहाँ होगी?"

साँप मन ही मन बाज़ की मूर्खता पर हँस रहा था। वह सोचने लगा कि आखिर उड़ने और रेंगने के बीच कौन-सा भारी अंतर है। अंत में तो सबके भाग्य में मरना ही लिखा है-शरीर मिट्टी में ही मिल जाएगा।

अचानक बाज ने अपना झुका हुआ सिर ऊपर उठाया और उसकी दृष्टि साँप की गुफा के चारों ओर घूमने लगी। चट्टानों में पड़ी दरारों से पानी गुफा में टपक रहा था। सीलन और अँधेरे में डूबी गुफा में एक भयानक दुर्गंध फैली हुई थी, मानो कोई चीज़ वर्षों से पड़ी-पड़ी सड़ गई हो।

बाज के मुँह से एक बड़ी ज़ोर की करुण चीख फूटी पड़ी– "आह! काश, मैं सिर्फ़ एक बार आकाश में उड़ पाता।"

बाज की ऐसी करुण चीख सुनकर साँप कुछ सिटपिटा–सा गया। एक क्षण के लिए उसके मन में उस आकाश के प्रति इच्छा पैदा हो गई जिसके वियोग में बाज इतना व्याकुल होकर छटपटा रहा था। उसने बाज से कहा– "यदि तुम्हें स्वतंत्रता इतनी प्यारी है तो इस चट्टान के किनारे से ऊपर क्यों नहीं उड़ जाने की कोशिश करते। हो सकता है कि तुम्हारे पैरों में अभी इतनी ताकत बाकी हो कि तुम आकाश में उड़ सको। कोशिश करने में क्या हर्ज़ है?"

बाज में एक नयी आशा जग उठी। वह दूने उत्साह से अपने घायल शरीर को घसीटता हुआ चट्टान के किनारे तक खींच लाया। खुले आकाश को देखकर उसकी आँखें चमक उठीं। उसने एक गहरी, लंबी साँस ली और अपने पंख फैलाकर हवा में कूद पड़ा।

किंतु उसके टूटे पंखों में इतनी शक्ति नहीं थी कि उसके शरीर का बोझ सँभाल सकें। पत्थर–सा उसका शरीर लुढ़कता हुआ नदी में जा गिरा। एक लहर ने उठकर उसके पंखों पर जमे खून को धो दिया, उसके थके–माँदे शरीर को सफ़ेद फेन से ढक दिया, फिर अपनी गोद में समेटकर उसे अपने साथ सागर की ओर ले चली।

लहरें चट्टानों पर सिर धुनने लगीं मानो बाज की मृत्यु पर आँसू बहा रही हों। धीरे–धीरे समुद्र के असीम विस्तार में बाज आँखों से ओझल हो गया।

चट्टान की खोखल में बैठा हुआ साँप बड़ी देर तक बाज की मृत्यु और आकाश के लिए उसके प्रेम के विषय में सोचता रहा।

"आकाश की असीम शून्यता में क्या ऐसा आकर्षण छिपा है जिसके लिए बाज ने अपने प्राण गँवा दिए? वह खुद तो मर गया लेकिन मेरे दिल का चैन अपने साथ ले गया। न जाने आकाश में क्या खजाना रखा है? एक बार तो मैं भी वहाँ जाकर उसके रहस्य का पता लगाऊँगा चाहे कुछ देर के लिए ही हो। कम से कम उस आकाश का स्वाद तो चख लूँगा।"

यह कहकर साँप ने अपने शरीर को सिकोड़ा और आगे रेंगकर अपने को आकाश की शून्यता में छोड़ दिया। धूप में क्षण भर के लिए साँप का शरीर बिजली की लकीर–सा चमक गया।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

किंतु जिसने जीवन भर रेंगना सीखा था, वह भला क्या उड़ पाता? नीचे छोटी-छोटी चट्टानों पर छप्प से साँप जा गिरा। ईश्वर की कृपा से बेचारा बच गया, नहीं तो मरने में क्या कसर बाकी रही थी। साँप हँसते हुए कहने लगा-

"सो उड़ने का यही आनंद है-भर पाया मैं तो! पक्षी भी कितने मूर्ख हैं। धरती के सुख से अनजान रहकर आकाश की ऊँचाइयों को नापना चाहते थे। किंतु अब मैंने जान लिया कि आकाश में कुछ नहीं रखा। केवल ढेर-सी रोशनी के सिवा वहाँ कुछ भी नहीं, शरीर को सँभालने के लिए कोई स्थान नहीं, कोई सहारा नहीं। फिर वे पक्षी किस बूते पर इतनी डींगें हाँकते हैं, किसलिए धरती के प्राणियों को इतना छोटा समझते हैं। अब मैं कभी धोखा नहीं खाऊँगा, मैंने आकाश देख लिया और खूब देख लिया। बाज़ तो बड़ी-बड़ी बातें बनाता था, आकाश के गुण गाते थकता नहीं था। उसी की बातों में आकर मैं आकाश में कूदा था। ईश्वर भला करे, मरते-मरते बच गया। अब तो मेरी यह बात और भी पक्की हो गई है कि अपनी खोखल से बड़ा सुख और कहीं नहीं है। धरती पर रेंग लेता हूँ, मेरे लिए यह बहुत कुछ है। मुझे आकाश की स्वच्छंदता से क्या लेना-देना? न वहाँ छत है, न दीवारें हैं, न रेंगने के लिए ज़मीन है। मेरा तो सिर चकराने लगता है। दिल काँप-काँप जाता है। अपने प्राणों को खतरे में डालना कहाँ की चतुराई है?"

साँप सोचने लगा कि बाज अभागा था जिसने आकाश की आज़ादी को प्राप्त करने में अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी।

किंतु कुछ देर बाद साँप के आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। उसने सुना, चट्टानों के नीचे से एक मधुर, रहस्यमय गीत की आवाज़ उठ रही है। पहले उसे अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। किंतु कुछ देर बाद गीत के स्वर अधिक साफ़ सुनाई देने लगे। वह अपनी गुफा से बाहर आया और चट्टान से नीचे झाँकने लगा। सूरज की सुनहरी किरणों में समुद्र का नीला जल झिलमिला रहा था। चट्टानों को भिगोती हुई समुद्र की लहरों में गीत के स्वर फूट रहे थे। लहरों का यह गीत दूर-दूर तक गूँज रहा था।

साँप ने सुना, लहरें मधुर स्वर में गा रही हैं।

हमारा यह गीत उन साहसी लोगों के लिए है जो अपने प्राणों को हथेली पर रखे हुए घूमते हैं।

चतुर वही है जो प्राणों की बाज़ी लगाकर जिंदगी के हर खतरे का बहादुरी से सामना करे।

ओ निड़र बाज! शत्रुओं से लड़ते हुए तुमने अपना कीमती रक्त बहाया है। पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक-एक बूँद ज़िंदगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी।

तुमने अपना जीवन बलिदान कर दिया किंतु फिर भी तुम अमर हो। जब कभी साहस और वीरता के गीत गाए जाएँगे, तुम्हारा नाम बड़े गर्व और श्रद्धा से लिया जाएगा।

"हमारा गीत जिंदगी के उन दीवानों के लिए है जो मर कर भी मृत्यु से नहीं डरते।"

-निर्मल वर्मा

© SCERT not to be republished

प्रश्न-अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. लेखक ने इस कहानी का शीर्षक कहानी के दो पात्रों के नाम पर रखा है। लेखक ने बाज और साँप को ही क्यों चुना होगा? आपस में चर्चा कीजिए।
2. क्या पक्षियों को उड़ते समय सचमुच आनंद का अनुभव होता होगा या स्वाभाविक कार्य में आनंद का अनुभव होता ही नहीं? अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. मानव ने भी हमेशा पक्षियों की तरह उड़ने की इच्छा की है। आज मनुष्य उड़ने की इच्छा किन साधनों से पूरी करता है? इन साधनों की उपयोगिता पर चर्चा कीजिए।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

पढ़िए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. घायल होने के बाद भी बाज ने यह क्यों कहा, मुझे कोई शिकायत नहीं है?
2. बाज ज़िन्दगी भर आकाश में ही उड़ता रहा फिर घायल होने के बाद भी वह उड़ना क्यों चाहता था?
3. साँप उड़ने की इच्छा को मूर्खतापूर्ण मानता था। फिर उसने उड़ने की कोशिश क्यों की?
4. बाज के लिए लहरों ने गीत क्यों गया था?
5. कहानी में से वे पंक्तियाँ चुनकर लिखिए जिनसे स्वतंत्रता की प्रेरणा मिलती हो?
6. "ओ निडर बाज! शत्रुओं से लड़ते हुए तुमने अपना कीमती रक्त बहाया है। पर वह समय दूर नहीं है, जब तुम्हारे खून की एक-एक बूँद ज़िन्दगी के अँधेरे में प्रकाश फैलाएगी और साहसी, बहादुर दिलों में स्वतंत्रता और प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करेगी।" इस पंक्ति में 'प्रकाश के लिए प्रेम पैदा करने' से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।
7. जिन ढूँढा तिन पाइयाँ, गहरै पानी पैठ।
   मैं बपुरा बूड़न डरा, रहा किनारे बैठ।। इस दोहे और इस कहानी के सार में क्या समानता है?

लिखिए

I. नीचे दिये गये प्रश्नों के उत्तर कम से कम पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा? लिखिए।
2. लहरों का गीत सुनने के बाद साँप ने क्या सोचा होगा? क्या उसने फिर से उड़ने की कोशिश की होगी? अपनी कल्पना से आगे की कहानी पूरी कीजिए।
3. साहस की परीक्षा विपरीत परिस्थितियों में होती है। ऐसा क्यों कहा जाता है?

II. नीचे दिये गये प्रश्न का उत्तर कम से कम दस वाक्यों में लिखिए।

1. स्वतंत्रता के दीवानों में साहस अनिवार्य रूप से पाया जाता है। किन्तु यही साहस जब दूसरों की स्वतंत्रता छीनने का प्रयास करता है तो दुस्साहस कहलाता है। आपकी समझ से साहस का काम क्या है? उदाहरण सहित लिखिए।
2. अपने घर में आराम से रहने में जीवन का आनंद है या स्वछंदता से भ्रमण करने में। कारण सहित अपने विचार लिखिए।

© SCERT not to be republished

शब्द भंडार

कहानी में से अपनी पसंद के मुहावरे चुनकर उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

भाषा की बात

'आरामदेह' शब्द में 'देह' 'देनेवाला' के अर्थ में प्रयुक्त है। देनेवाला के अर्थ में **द, प्रद, दाता, दाई** आदि का प्रयोग भी होता है, जैसे– **सुखद, सुखदाता, सुखदाई, सुखप्रद।** उपर्युक्त समानार्थी प्रत्ययों को लेकर दो–दो शब्द बनाइए।

प्रशंसा

समाज को साहसी लोगों का अमूल्य योगदान रहा है। बच्चे भी इसमें पीछे नहीं हैं। प्रत्येक गणतंत्र दिवस के अवसर पर साहसी व बहादुर बालकों को राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया जाता है। साहसी लोगों का सम्मान करने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं।

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

यदि इस कहानी के पात्र बाज और साँप न होकर कोई और होते तब कहानी कैसी होती? अपनी कल्पना से लिखिए।

परियोजना कार्य

पशु–पक्षियों के संवाद पर आधारित कोई अन्य कहानी संकलित कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता हूँ। 4. साहस का महत्व बता सकता हूँ। 5. पाठ के आधार पर राजेश के बारे में कहानी लिख सकता हूँ।		

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

पहाड़ से ऊँचा आदमी

तीन सौ साठ फीट लंबा और तीस फीट चौड़ा पहाड़ काटने के लिए कितना वक्त लग सकता है? निश्चत ही टैक्नोलॉजी के इस युग में इस सवाल का जवाब इस बात पर निर्भर करेगा कि आप पहाड़ का सीना चीरने के लिए किस मशीन का इस्तेमाल कर रहे हैं, लेकिन अगर यह पूछा जाए कि इसी काम को एक ही शख्स को अंजाम देना हो तो कितना वक्त लगेगा?

शायद यह चकरा देनेवाला सवाल होगा लेकिन बिहार के गया ज़िले के गेलौर गाँव में एक मज़दूर परिवार में जन्मे एक शख्स ने इसका जवाब अपने बाजुओं और अपनी मेहनत से दिया। पहाड़ को हिला देनेवाले उन दशरथ माँझी ने राजधानी दिल्ली में 2007 में अंतिम साँस ली। उनका जन्म 1934 में हुआ था।

वर्ष 1966 की किसी अलसुबह जब छनी हथौड़ा लेकर दशरथ माँझी अपने गाँव के पास स्थित पहाड़ के पास पहुँचे तो बहुत कम लोगों को इस बात का पता था कि इस शख्स ने अपने दिल में क्या ठान लिया है। मज़दूरी और कभी कभार इधर-उधर काम करनेवाले दशरथ माँझी ने जब पहाड़ पर छेनी हथौड़ा चलाना शुरू किया तो आने-जाने वाले राहगीरों के लिए ही नहीं, गाँव के लोगों के लिए भी वह एक हँसी के पात्र बन गए थे।

जीवन संगिनी फागुनी देवी का समय पर इलाज न करा पाने से उसे खो चुके दशरथ माँझी को इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। धुन के पक्के दशरथ की अथक मेहनत बाईस साल बाद तब रंग लाई जब उस पहाड़ से एक रास्ता दूसरे गाँव तक निकल आया।

आखिर ऐसी क्या बात हुई कि दशरथ को पहाड़ चीरने की धुन सवार हुई। दरअसल पहाड़ को जब तक चीरा नहीं गया था तब तक दशरथ के गाँव से सबसे नज़दीकी वजीरगंज अस्पताल 90 किलोमीटर पड़ता था। दशरथ की पत्नी की तबीयत खराब होने पर उसे वहाँ ले जाने के दौरान ही उसने दम तोड़ दिया था। उन्हें लगा कि पहाड़ से कोई रास्ता होता तो मैं अपनी पत्नी को वक्त पर अस्पताल ले जाता और उसका इलाज करा पाता।

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना की एक कविता है: 'दुख तुम्हें क्या तोड़ेगा तुम दुख को तोड़ दो। बस अपनी आँखें औरों के सपनों से जोड़ दो।'

© SCERT not to be republished

ज़िंदगी का तीसवाँ वसंत पार कर चुके दशरथ माँझी ने शायद शेष गाँव के निवासियों के मन में दबी छोटी-सी हसरत को अपनी ज़िंदगी का मिशन बना डाला और अपनी पत्नी की असामयिक मौत से उपजे प्रचंड दुख को एक नई संकल्प शक्ति में तब्दील कर दिया। पाँच-छह साल तक दशरथ अकेले ही मेहनत करते रहे। धीरे-धीरे और लोग भी जुड़ते चले गए। वहाँ एक दानपात्र भी रखा गया था जिसमें लोग चंदा डाल देते थे। कई लोग अपने घर से अनाज भी देते थे।

आज की तारीख में आप कह सकते हैं कि गेलौर से 'वजीरगंज' जाने की अस्सी किलोमीटर की दूर को 13 किलोमीटर ला देने वाला यह रास्ता एक श्रमिक के प्यार की निशानी है। एक अंग्रेज पत्रकार ने लिखा : 'पूअरमैंस ताजमहल।'

कुछ साल पहले एक पत्रकार उनसे मिलने गया, तब एक फक्कड़ कबीरपंथी की तरह यायावरी कर रहे दशरथ माँझी ने उन्हें अपनी एक प्रिय कहानी सुनाई थी जो उस चिड़िया के बारे में थी जिसका घोंसला समुद्र बहाकर ले गया था। कहानी उस चिड़िया की प्रचंड जिजीविषा और संकल्प को बयाँ कर रही थी जिसके तहत समुद्र द्वारा घोंसला न लौटाने पर चिड़िया ने अकेले ही समंदर को सुखा देने का संकल्प लिया। शुरूआत में उसे पागल करार देने वाली बाकी चिड़ियाँ भी उसके साथ जुड़ गई और फिर विष्णु का वाहन गरुड़ भी इन कोशिशों का हिस्सा बन गया। फिर बीच-बचाव करने के लिए खुद विष्णु को आना पड़ा जिन्होंने समुद्र को धमकाया कि अगर उसने चिड़िया का घोंसला नहीं लौटाया तो पल भर में उसे सुखा दिया जाएगा। तब पत्रकार ने जब उनसे पूछा कि कहानी की चिड़िया क्या आप ही हैं। इसके जवाब में आँखों में शरारत भरी मुसकान लिए दशरथ माँझी ने बात टाल दी थी।

पिछले कुछ सालों से दशरथ माँझी कबीरपंथी साधु बन गए थे और यायावर बने हुए थे लेकिन कबीर का उनका स्वीकार महज ऊपरी नहीं था। उनके विचारों में भी कबीर जैसी प्रखरता थी। गरीब और मेहनतकशों का ईश्वर पूजा में उलझे रहना और तमाम अंधश्रद्धाओं का शिकार होना उन्हें कचोटता था। वे कहते थे कि ज़िंदगी भर फाकाकशी करते रहे आदमी की मौत के बाद मृत्युभोज में अच्छे-अच्छे पकवान खिलाए जाते हैं। इसके लिए लोग कर्जा क्यों लेते हैं.?

दशरथ माँझी हमारे बीच नहीं हैं लेकिन क्या वे हमें उन मिथकीय पात्रों की याद दिलाते प्रतीत नहीं होते, जैसे पात्र हमें पुराणों में मिलते हैं, फिर वह चाहे प्रोमेथियस हो या भगीरथ। ऐसी शख्सियतें, जो मनुष्य की उद्दाम जिजीविषा को प्रतिबिंबित कर रही होती हैं और अपनी कोशिशों से प्रकृति की दानव शक्तियों और इन्सानियत के दुश्मनों से लड़ रही होती हैं।

अपने जीवन का फलसफा बयान करते हुए उन्होंने एक पत्रकार को शायद इसलिए बताया था कि पहाड़ मुझे उतना ऊँचा कभी नहीं लगा जितना लोग बताते हैं। मनुष्य से ज़्यादा ऊँचा कोई नहीं होता।

– सुभाष गाताड़े

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

उपवाचक

युगों का दौर

भारत की खोज -पंडित जवाहरलाल नेहरू

- गुप्त शासन में राष्ट्रीयता और साम्राज्यवाद
- दक्षिण भारत
- शांतिपूर्ण विकास और युद्ध के तरीके
- प्रगति बनाम सुरक्षा
- भारत का प्राचीन रंगमंच
- संस्कृत भाषा की जीवंतता और स्थायित्व
- दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय उपनिवेश और संस्कृति
- विदेशों पर भारतीय कला का प्रभाव
- भारत का विदेशी व्यापार
- प्राचीन भारत में गणितशास्त्र
- विकास और ह्रास

© SCERT not to be republished

गुप्त शासन में राष्ट्रीयता और साम्राज्यवाद

मौर्य साम्राज्य का अवसान हुआ और उसकी जगह शुंग वंश ने ले ली जिसका शासन अपेक्षाकृत बहुत छोटे क्षेत्र पर था। दक्षिण में बड़े राज्य उभर रहे थे और उत्तर में काबुल से पंजाब तक बाख्त्री या भारतीय-यूनानी फैल गए थे। मेनांडर के नेतृत्व में उन्होंने पाटलीपुत्र तक पर हमला किया किंतु उनकी हार हुई। खुद मेनांडर पर भारतीय चेतना और वातावरण का प्रभाव पड़ा और वह बौद्ध हो गया। वह राजा मिलिंद के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बौद्ध आख्यानों में उसकी लोक-प्रसिद्ध लगभग एक संत के रूप में हुई। भारतीय और यूनानी संस्कृतियों के मेल से अफ़गानिस्तान और सरहदी सूबे के क्षेत्र में गांधार की यूनानी-बाद्ध कला का जन्म हुआ।

भारत के मध्य प्रदेश में सांची के निकट बेसनगर में ग्रेनाइट पत्थर की एक लाट है जो हेलिओदो स्तंभ के नाम से प्रसिद्ध है। इसका समय ई.पू. पहली शताब्दी है और इस पर संस्कृत का एक लेख खुदा है। इससे हमें उन यूनानियों के भारतीयकरण की झलक मिलती है जो सरहद पर आए थे और भारतीय संस्कृति को जज़्ब कर रहे थे।

मध्य-एशिया में शक (सीदियन) लोग ऑक्सस (अक्षु) नदी की घाटी में बस गए थे। यूइ-ची सुदूर पूरब से आए और उन्होंने इन लोगों को उत्तर-भारत की ओर धकेल दिया। ये शक बौद्ध और हिंदू हो गए। यूइ-चियों में से एक दल कुषाणों का था। उन्होंने सब पर अधिकार करके उत्तर-भारत तक अपना विस्तार कर लिया। उन्होंने शकों को पराजित करके उन्हें दक्षिण की ओर खदेड़ा। शक काठियावाड़ और दक्खिन की ओर चले गए। इसके बाद कुषाणों ने पूरे उत्तर-भारत पर और मध्य-एशिया के बहुत बड़े भाग पर अपना व्यापक और मज़बूत साम्राज्य कायम किया।

उनमें से कुछ ने हिंदू धर्म को अपना लिया लेकिन अधिकांश लोग बौद्ध हो गए। उनका सबसे प्रसिद्ध शासक कनिष्क उन बौद्ध कथाओं का भी नायक है, जिनमें उसके महान कारनामों और सार्वजनिक कामों का ज़िक्र किया गया है। उसके बौद्ध होने के बावजूद ऐसा लगता है कि राज्य-धर्म का स्वरूप कुछ मिला-जुला था जिसमें ज़रथुष्ट्र के धर्म का भी योगदान था। यह सरहदी सूबा, जो कुषाण साम्राज्य कहलाया, उसकी राजधानी आधुनिक पेशावर के निकट थी। तक्षशिला का पुराना विश्वविद्यालय भी उसके निकट था। वह बहुत से राष्ट्रों से आने वाले लोगों के मिलने का स्थान बन गया। यहाँ भारतीयों की मुलाकात सीदियनों, यूइ-चियों, ईरानियों, बाख्त्री-यूनानियों, तुर्कों और चीनियों से होती थी। ये विभिन्न संस्कृतियाँ एक-दूसरे को प्रभावित करती थीं। इनके आपसी प्रभावों के परिणामस्वरूप मूर्तिकला और चित्रकला की एक सशक्त शैली ने जन्म लिया। इतिहास की दृष्टि से, इसी ज़माने में चीन और भारत के बीच पहले संपर्क हुए और 64 ई. में यहाँ चीनी राजदूत आए। उस समय चीन से भारत को जो तोहफ़े मिले उनमें आड़ू और नाशपाती के पेड़ थे। गोबी रेगिस्तान के ठीक किनारे-किनारे तूर्फ़ान और कूचा में भारतीय, चीनी और ईरानी संस्कृतियों का अद्भुत मेल हुआ।

कुषाण काल में बौद्ध धर्म दो संप्रदायों में बँट गया- महायान और हीनयान। उन दोनों के बीच मतभेद उठ खड़े हुए। भारतीय परंपरा के अनुसार बड़ी-बड़ी सभाओं में इन समस्याओं पर विवाद आयोजित किए जाने लगे। इन बहसों में सारे देश के प्रतिनिधि भाग लेते थे। इन विवादों में एक नाम सबसे अलग और विशिष्ट दिखाई पड़ता है। यह नाम नागार्जुन का है जो ईसा की पहली शताब्दी में हुए। उनका व्यक्तित्व महान था। वे बौद्ध शास्त्रों और भारतीय दर्शन दोनों के बहुत बड़े विद्वान थे। उन्हीं के कारण भारत में महायान की विजय हुई। महायान के ही सिद्धांतों का प्रचार चीन में हुआ। लंका और बर्मा (वर्तमान श्रीलंका और म्यांमार) हीनयान को मानते रहे।

कुषाणों ने अपना भारतीयकरण कर लिया था। वे भारतीय संस्कृति के संरक्षक हो गए थे, फिर भी राष्ट्रीय विरोध की एक अंतर्धारा उनके शासन के खिलाफ़ बराबर चल रही थी। बाद में जब भारत में नई जातियों का आगमन हुआ, तो ईसा की चौथी शताब्दी के आरंभ में विदेशियों का विरोध करने वाले इस राष्ट्रीय आंदोलन ने निश्चित रूप ग्रहण कर लिया। एक दूसरे महान शासक ने, जिसका नाम भी चंद्रगुप्त था, नए हमलावरों को मार भगाया और एक शक्तिशाली विशाल साम्राज्य कायम किया।

इस तरह ई. 320 में गुप्त-साम्राज्य का युग आरंभ हुआ। इस साम्राज्य में एक के बाद एक कई महान शासक हुए, जो युद्ध और शांति, दोनों कलाओं में सफल हुए। लगातार हमलों ने विदेशियों के प्रति प्रबल विरोधी भावना को जन्म दिया और देश के पुराने ब्राह्मण-क्षत्रिय तत्वों को मातृभूमि और संस्कृति दोनों की रक्षा के बारे में सोचने के लिए मजबूर होना पड़ा। जो विदेशी तत्व यहाँ घुलमिल गए थे, उन्हें स्वीकार कर लिया गया, लेकिन हर नए आने वाले को प्रबल विरोध का सामना करना पड़ा और पुराने ब्राह्मण आदर्शों के आधार पर सजातीय राज्य कायम करने का प्रयास किया गया। लेकिन क्रमशः इन आदर्शों में ऐसी कट्टरता विकसित होने लगी थी जो इनके स्वभाव के विपरीत थी।

आरंभ में जब आर्य यहाँ उस स्थान पर आए जिसे उन्होंने आर्यावर्त्त या भारतवर्ष कहा था तब भारतवर्ष के सामने समस्या यह थी कि इस नई जाति और संस्कृति के बीच समन्वय कैसे कायम किया जाए। भारत ने इस स्थिति का सामना करते हुए मिली-जुली भारतीय-आर्य संस्कृति की मज़बूत बुनियाद पर निर्मित एक स्थायी हल प्रस्तुत किया। दूसरे विदेशी तत्व यहाँ आए और जज़्ब होते गए। लेकिन समय-समय पर अजीब रस्मो-रिवाज वाले अजनबी लोगों के हमलों ने उसे हिला दिया। वह इन हमलों को अनदेखा नहीं कर सकता था क्योंकि इन्होंने केवल उसके राजनीतिक ढाँचे को ही नहीं तोड़ा बल्कि उसके सांस्कृतिक आदर्शों और सामाजिक ढाँचे के लिए भी खतरा पैदा कर दिया। इनके विरुद्ध जो प्रतिक्रिया हुई उसका रूप मूलतः राष्ट्रवादी था। उसमें राष्ट्रवाद की शक्ति भी

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

थी और संकीर्णता भी। धर्म और दर्शन, इतिहास और परंपरा, रीति-रिवाज और सामाजिक ढाँचा, जिसके व्यापक घेरे में उस समय के भारत के जीवन के सभी पहलू आते थे, जिसे ब्राह्मणवाद या हिंदूवाद कहा गया, वह इस राष्ट्रवाद का प्रतीक बना। यह दरअसल राष्ट्रीय धर्म था, जिससे वे तमाम गहरी जातीय और सांस्कृतिक प्रवृत्तियाँ प्रभावित हुईं जो आज हर जगह राष्ट्रीयता की बुनियाद में मौजूद हैं। जिस बौद्ध धर्म का जन्म भारतीय विचार से हुआ था, उसके लिए भारत वह पुण्य भूमि थी जहाँ बुद्ध ने जन्म लिया, उपदेश दिया और वहीं उनका निर्वाण हुआ। पर बौद्ध धर्म मूल रूप में अंतर्राष्ट्रीय था, विश्वधर्म था। जैसे-जैसे उसका विकास और विस्तार हुआ वैसे-वैसे उसका यह रूप और विकसित होता गया। इसलिए पुराने ब्राह्मण धर्म के लिए स्वाभाविक था कि वह बार-बार राष्ट्रीय पुनर्जागरण का प्रतीक बने।

यह धर्म और दर्शन भारत के भीतरी धर्मों और जातीय तत्वों के प्रति तो सहनशील और उदार था पर विदेशियों के प्रति उसकी उग्रता बराबर बढ़ती जाती थी और वह अपने आपको उनके प्रभाव से बचाने की कोशिश करता था। ऐसा करने से उनमें जो राष्ट्रवादी चेतना पैदा हुई थी वह अक्सर साम्राज्यवाद की शक्ल अख्तियार करने लगती थी। गुप्त शासकों का समय बहुत प्रबुद्ध, शक्तिशाली, अत्यंत सुसंस्कृत और तेजस्विता से भरपूर था। फिर भी उसमें साम्राज्यवादी प्रवृत्तियाँ विकसित हो गईं। इनके बहुत बड़े शासक समुद्रगुप्त को भारत का नेपोलियन कहा गया है। साहित्य और कला की दृष्टि से यह बहुत शानदार समय था।

चौथी शताब्दी के आरंभ से लेकर डेढ़ सौ वर्ष तक गुप्त वंश ने उत्तर में एक बड़े शक्तिशाली और समृद्ध राज्य पर शासन किया। इसके बाद लगभग डेढ़ सौ वर्ष तक उनके उत्तराधिकारी अपने बचाव में लगे रहे और साम्राज्य सिकुड़कर लगातार छोटा होता चला गया। मध्य एशिया से नए आक्रमणकारी लगातार भारत पर हमला कर रहे थे। ये 'गोरे हुण' कहलाते थे जिन्होंने मुल्क में बड़ी लूटमार की। अंततः यशोवर्मन के नेतृत्व में संगठित होकर उन पर आक्रमण किया गया और उनके सरदार मिहिरगुल को बंदी बना लिया गया। लेकिन गुप्तों के वंशज बालादित्य ने उसके प्रति उदारता का व्यवहार किया और उसे भारत से लौट जाने दिया। मिहिरगुल ने इसके बदले लौटकर अपने मेहरबान पर कपटपूर्ण हमला कर दिया।

उत्तर भारत में हूणों का शासन बहुत थोड़े समय रहा-लगभग आधी-शताब्दी। उनमें से बहुत से लोग देश में छोटे-छोटे सरदारों के रूप में यहीं रह गए। वे कभी-कभी परेशानी पैदा करते थे और भारतीय जन समुदाय के सागर में जज़्ब होते जाते थे। इनमें से कुछ सरदार सातवीं शताब्दी के आरंभ में आक्रमणकारी हो गए। उनका दमन करके कन्नौज के राजा हर्षवर्धन ने उत्तर से लेकर मध्य भारत तक एक बहुत शक्तिशाली राज्य की स्थापना की। वे कट्टर बौद्ध थे। उनका महायान संप्रदाय अनेक रूपों में हिंदूवाद से मिलता-जुलता था। उन्होंने बौद्ध और हिंदू दोनों धर्मों को बढ़ावा दिया। उन्हीं के समय में प्रसिद्ध चीनी यात्री हुआन त्सांग (या युआन च्वान) भारत आया था (629 ई. में)। हर्षवर्धन कवि और नाटककार था। उसने अपने दरबार में बहुत से कलाकारों और कवियों को इकट्ठा किया और अपनी राजधानी उज्जयिनी को सांस्कृतिक गतिविधियों का प्रसिद्ध केंद्र बनाया था। हर्ष की मृत्यु 648 ई. में हुई थी। यह लगभग वह समय था जब अरब के रेगिस्तानों से अफ्रीका और एशिया में फैलने के लिए इस्लाम सिर उठा रहा था।

दक्षिण भारत

दक्षिण भारत में मौर्य साम्राज्य के सिमटकर अंत हो जाने के एक हज़ार साल से भी ज़्यादा समय तक बड़े-बड़े राज्य फूले-फले। दक्षिण भारत अपनी बारीक दस्तकारी और समुद्री व्यापार के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध था। उसकी गिनती समुद्री ताकतों में होती थी और इनके जहाज दूर देशों तक माल पहुँचाया करते थे। वहाँ यूनानियों की बस्तियाँ थीं और रोमन सिक्के भी वहाँ पाए गए।

उत्तरी भारत पर बार-बार होने वाले हमलों का सीधा प्रभाव दक्षिण पर नहीं पड़ा। इसका परोक्ष प्रभाव यह ज़रूर हुआ कि बहुत से लोग उत्तर से दक्षिण में जाकर बस गए। इन लोगों में राजगीर, शिल्पी और कारीगर भी शामिल थे। इस प्रकार दक्षिण पुरानी कलात्मक-परंपरा का केंद्र बन गया और उत्तर उन नयी धाराओं से अधिक प्रभावित हुआ, जो आक्रमणकारी अपने साथ लेते थे।

शांतिपूर्ण विकास और युद्ध के तरीके

बार-बार हमलों और एक के बाद दूसरे साम्राज्य की स्थापना का जो संक्षिप्त ब्यौरा प्रस्तुत किया गया, उसके बीच देश में शांतिपूर्ण और व्यवस्थित शासन के लंबे दौर रहे हैं।

मौर्य, कुषाण, गुप्त और दक्षिण में आंध्र, चालुक्य, राष्ट्रकूट के अलावा और भी राज्य ऐसे हैं जो दो-दो, तीन-तीन सौ वर्षों तक कायम रहे। इनमें लगभग सभी राजवंश देशी थे। कुषाणों जैसे लोगों ने भी जो उत्तरी सीमा पार से आए थे, जल्दी अपने आपको इस देश और इसकी सांस्कृतिक परंपरा के अनुरूप ढाल लिया। जब कभी दो राज्यों के बीच युद्ध या कोई आंतरिक राजनीतिक आंदोलन होता था, तो आम जनता की जीवनचर्या में बहुत कम हस्तक्षेप किया जाता था।

इस इतिहास के व्यापक सर्वेक्षण से इस बात का संकेत मिलता है कि यहाँ शांतिपूर्ण और व्यवस्थित जीवन के लंबे दौर यूरोप की तुलना में कहीं अधिक हैं। यह धारणा भ्रामक है कि अंग्रेज़ी राज ने पहली बार भारत में शांति और व्यवस्था कायम की। अलबत्ता यह सही है कि जब भारत में अंग्रेज़ी शासन कायम हुआ, उस समय देश अवनति की पराकाष्ठा पर था। राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था टूट चुकी थी। वास्तव में यही कारण था कि वह राज यहाँ कायम हो सका।

प्रगति बनाम सुरक्षा

भारत में जिस सभ्यता का निर्माण किया गया उसका मूल आधार स्थिरता और सुरक्षा की भावना थी। इस दृष्टि से वह उन तमाम सभ्यताओं से कहीं अधिक सफल रही जिनका उदय पश्चिम में हुआ था। वर्ण-व्यवस्था और संयुक्त परिवारों पर आधारित सामाजिक ढाँचे ने इस उद्देश्य को पूरा करने मे सहायता की। यह व्यवस्था अच्छे-बुरे के भेद को मिटाकर सबको एक स्तर पर ले आती है और इस तरह व्यक्तिवाद की भूमिका इसमें बहुत कम रह जाती है। यह दिलचस्प बात है कि जहाँ भारतीय दर्शन अत्यधिक व्यक्तिवादी है और उसकी लगभग सारी चिंता व्यक्ति के विकास को लेकर है वहाँ भारत का सामाजिक ढाँचा सामुदायिक था और उसमें सामाजिक और सामुदायिक रीति-रिवाजों का कड़ाई से पालन करना पड़ता था।

इस सारी पाबंदी के बावजूद पूरे समुदाय को लेकर बहुत लचीलापन भी था। ऐसा कोई कानून या सामाजिक नियम नहीं था, जिसे रीति-रिवाज से बदला न जा सके। यह भी संभव था कि नए समुदाय अपने अलग-अलग रीति-रिवाजों, विश्वासों और जीवन-व्यवहार को बनाए रखकर बड़े सामाजिक संगठन के अंग बने रहें। इसी लचीलापन ने विदेशी तत्वों को आत्मसात करने में सहायता की।

समन्वय केवल भारत में बाहर से आने वाले विभिन्न तत्वों के साथ नहीं किया गया, बल्कि व्यक्ति के बाहरी और भीतरी जीवन तथा मनुष्य और प्रकृति के बीच भी समन्वय करने का प्रयास दिखाई पड़ता है। इस सामान्य सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ने भारत का निर्माण किया और इस पर विविधता के बावजूद एकता की मोहर लगाई। राजनीतिक ढाँचे के मूल में स्वशासी ग्राम व्यवस्था थी। राजा आते-जाते रहे पर यह व्यवस्था नींव की तरह कायम रही। बाहर से आने वाले नए लोग इस ढाँचे में सिर्फ़ सतही हलचल पैदा कर पाते थे। राज सत्ता चाहे देखने में कितनी निरंकुश लगती हो, रीति-रिवाजों और वैधानिक बंधनों से कुछ इस तरह नियंत्रित रहती थी कि कोई शासक ग्राम

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

समुदाय के सामान्य और विशेषाधिकारों में आसानी से दखल नहीं दे सकता था। इन प्रचलित अधिकारों के तरत समुदाय और व्यक्तित्व दोनों की स्वतंत्रता एक हद तक सुरक्षित रहती थी।

ऐसा लगता है कि ऐसे हर तत्व ने जो बाहर से भारत में आया और जिसे भारत ने जज़्ब कर लिया, भारत को कुछ दिया और उससे बहुत कुछ लिया। जहाँ वह अलग-थलग रहा, वहाँ वह अंततः नष्ट हो गया और कभी-कभी इस प्रक्रिया में उसने खुद को या भारत को नुकसान पहुँचाया।

भारत का प्राचीन रंगमंच

भारतीय रंगमंच अपने मूल में, संबद्ध विचारों में और अपने विकास में पूरी तरह स्वतंत्र था। इसका मूल उद्गम ऋग्वेद की उन ऋचाओं और संवादों में खोजा जा सकता है जिनमें एक हद तक नाटकीयता है। रामायण और महाभारत में नाटकों का उल्लेख मिलता है। कृष्ण-लीला से संबंधित गीत, संगीत और नृत्य में इसने आकार ग्रहण करना आरंभ कर दिया था। ई. पूर्व छठी या सातवीं शताब्दी के महान वैयाकरण पाणिनि ने कुछ नाट्य-रूपों का उल्लेख किया है।

रंगमंच की कला पर रचित नाट्यशास्त्र को ईसा की तीसरी शताब्दी की रचना कहा जाता है। ऐसे ग्रंथ की रचना तभी हो सकती थी, जब नाट्य कला पूरी तरह विकसित हो चुकी हो और नाटकों की सार्वजनिक प्रस्तुति आम बात हो।

अब यह माना जाने लगा है कि नियमित रूप से लिखे गए संस्कृत नाटक ई.पू. तीसरी शताब्दी तक पूरी तरह प्रतिष्ठित हो चुके थे। जो नाटक हमें मिले हैं उनमें पहले के ऐसे रचनाकारों और नाटकों का अक्सर हवाला दिया गया है जो अभी तक नहीं मिले हैं। ऐसे नाटककारों में एक भास था। इस शताब्दी के आरंभ में उसके तेरह नाटकों का एक संग्रह खोज में मिला है। अब तक मिले संस्कृत नाटकों में प्राचीनतम नाटक अश्वघोष के हैं। वह ईसवी सन् के आरंभ के ठीक पहले या बाद में हुआ था। ये ताड़-पत्र पर लिखित पांडुलिपियों के अंश मात्र हैं और आश्चर्य की बात यह कि ये गोबी रेगिस्तान की सरहदों पर तुर्फ़ान में मिले हैं। अश्वघोष धर्मपरायण बौद्ध हुआ। उसने बुद्धचरित नाम से बुद्ध की जीवनी लिखी। यह ग्रंथ बहुत प्रसिद्ध हुआ और बहुत समय पहले भारत, चीन और तिब्बत में बहुत लोकप्रिय हुआ।

यूरोप को प्राचीन भारतीय नाटक के बारे में पहली जानकारी 1789 ई. में तब हुई जब कालिदास के शकुंतला का सर विलियम जोंस कृत अनुवाद प्रकाशित हुआ। सर विलियम जोंस के अनुवाद के आधार पर जर्मन, फ्रेंच, डेनिश और इटालियन में भी इसके अनुवाद हुए। गेटे पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा और उसने शकुंतला की अत्यधिक प्रशंसा की।

कालिदास को संस्कृत साहित्य का सबसे बड़ा कवि और नाटककार माना गया है। उसका समय अनिश्चित है, पर संभावना यही है कि वह चौथी शताब्दी के अंत में गुप्त वंश के चंद्रगुप्त (द्वितीय) विक्रमादित्य के शासन-काल में उज्जयिनी में था। माना जाता है कि वह दरबार के नौ रत्नों में से एक था। उसकी रचनाओं में जीवन के प्रति प्रेम और प्राकृतिक सौंदर्य के प्रति आवेग का भाव मिलता है।

कालिदास की एक लंबी कविता है मेघदूत। एक प्रेमी, जिसे बंदी बनाकर उनकी प्रेयसी से अलग कर दिया गया है, वर्षा ऋतु में, एक बादल से अपनी तीव्र चाहत का संदेश उस तक पहुँचाने के लिए कहता है।

कालिदास से संभवतः काफ़ी पहले एक बहुत प्रसिद्ध नाटक की कोमल और एक हद तक बनावटी नाटक है। लेकिन इसमें ऐसा सत्य है जो हमें प्रभावित करता है और हमारे सामने उस समय की मानसिकता और सभ्यता की झाँकी प्रस्तुत करता है।

400 ई. के लगभग, चंद्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में एक और प्रसिद्ध नाटक लिखा गया। यह विशाखदत्त का नाटक **मुद्राराक्षस** था। यह विशुद्ध राजनीतिक नाटक था, जिसमें प्रेम या किसी पौराणिक कथा को आधार नहीं बनाया गया है। कुछ अर्थों में यह नाटक वर्तमान स्थिति में बहुत प्रासंगिक है।

राजा हर्ष, जिसने सातवीं सदी ई. में एक नया साम्राज्य कायम किया, नाटककार भी था। हमें उसके लिखे हुए तीन नाटक मिलते हैं। सातवीं सदी के आसपास ही भवभूति हुआ, जो संस्कृत साहित्य का चमकता सितारा था। वह भारत में बहुत लोकप्रिय हुआ और केवल कालिदास का ही स्थान उसके ऊपर माना जाता है।

संस्कृत नाटकों की यह धारा सदियों तक बहती रही लेकिन उन्नीसवीं शताब्दी के आरंभ में गुणात्मक दृष्टि से स्पष्ट रूप से उसमें ह्रास दिखाई देने लगा।

प्राचीन नाटकों की (कालिदास तथा अन्य लोगों के) भाषा मिली-जुली है- संस्कृत और उसके साथ एक या एकाधिक प्राकृत, यानी संस्कृत के बोलचाल में प्रचलित रूप। उसी नाटक में शिक्षित पात्र संस्कृत बोलते हैं और सामान्य अशिक्षित जन समुदाय, प्रायः स्त्रियाँ प्राकृत, हालाँकि उनमें अनुवाद भी मिलते हैं। यह साहित्यिक भाषा और लोकप्रिय कला के बीच समझौता था। फिर भी प्राचीन नाटक अक्सर राज-दरबारों या उसी प्रकार के अभिजात दर्शकों के लिए अभिजात्यवादी कला को प्रस्तुत करते हैं।

इस ऊँचे दर्जे के साहित्यिक रंगमंच के अलावा हमेशा एक लोकमंच भी रहा है। इसका आधार भारतीय पुराकथाएँ और महाकाव्यों से ली गई कथाएँ होती थीं। दर्शकों को इन विषयों की अच्छी तरह जानकारी रहती थी और इनका सरोकार नाटकीय तत्व से कहीं अधिक प्रस्तुति पर रहता था। ये अलग-अलग क्षेत्रों की बोलियों में रचे जाते थे, अतः उस क्षेत्र विशेष तक ही सीमित रहते थे। दूसरी ओर संस्कृत-नाटकों का चलन पूरे भारत में था क्योंकि उनकी भाषा पूरे भारत के शिक्षित समुदाय की भाषा थी।

संस्कृत भाषा की जीवंतता और स्थायित्व

संस्कृत अद्भुत रूप से समृद्ध भाषा है- अत्यंत विकसित और नाना प्राकर से अलंकृत। इसके बावजूद वह नियत और व्याकरण के उस ढाँचे में सख्ती से जकड़ी है जिसका निर्माण 2600 वर्ष पहले पाणिनि ने किया था। इसका प्रसार हुआ, संपन्न हुई, भरी-पूरी और अलंकृत हुई, पर इसने अपने मूल को नहीं छोड़ा। संस्कृत साहित्य के पतन के काल में भाषा ने अपनी कुछ शक्ति और शैली की सादगी खो दी। सर विलियम जोंस ने 1784 में कहा था- "संस्कृत भाषा चाहे जितनी पुरानी हो, उसकी बनावट अद्भुत है, यूनानी भाषा के मुकाबले यह अधिक पूर्ण है, लातीनी के मुकाबले अधिक उत्कृष्ट है और दोनों के मुकाबले अधिक परिष्कृत है। पर दोनों के साथ वह इतनी अधिक मिलती-जुलती है कि यह संयोग आकस्मिक नहीं हो सकता। यह साफ़ पहचाना जा सकता है कि इन सभी भाषाओं का स्रोत एक ही है, जो शायद अब मौजूद नहीं रहा है।"

संस्कृत आधुनिक भारतीय भाषाओं की जननी है उनका अधिकांश शब्दकोश और अभिव्यक्ति का ढंग संस्कृत की देन है। संस्कृत काव्य और दर्शन के बहुत से सार्थक और महत्वपूर्ण शब्द, जिनका विदेशी भाषाओं में अनुवाद नहीं किया जा सकता, आज भी हमारी लोक प्रचलित भाषाओं में जीवित हैं।

दक्षिण-पूर्व एशिया में भारतीय उपनिवेश और संस्कृति

रवींद्रनाथ ठाकुर ने लिखा था, "मेरे देश को जानने के लिए उस युग की यात्रा करनी होगी जब भारत ने अपनी आत्मा को पहचानकर अपनी भौतिक सीमाओं का अतिक्रमण किया।"

हमें केवल बीते हुए समय में जाने की ही ज़रूरत नहीं है, बल्कि तन से नहीं तो मन से एशिया के विभिन्न देशों की यात्रा करने की जरूरत है जहाँ भारत ने अनेक रूपों में अपना विस्तार किया था।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

पिछली चौथाई सदी के दौरान दक्षिण-पूर्वी एशिया के इस दूर तक फैले क्षेत्र के इतिहास पर बहुत प्रकाश डाला गया है। इसे कभी-कभी वृहत्तर भारत कहा गया है। लेकिन अब भी बहुत-सी कड़ियाँ नहीं मिलतीं। बहुत से अंतर्विरोध भी हैं। किंतु सामान्य रूप से सामग्री की कोई कमी नहीं है। भारतीय पुस्तकों के हवाले मिलते हैं, अरब यात्रियों के लिखे हुए वृत्तांत हैं और इन सबसे अधिक महत्वपूर्ण है चीन से प्राप्त ऐतिहासिक विवरण। इसके अलावा बहुत से पुराने शिलालेख और ताम्र-पत्र हैं। जावा और बाली में भारतीय स्त्रोतों पर आधारित समृद्ध साहित्य है जिसमें अक्सर भारतीय महाकाव्यों और पुराकथाओं का भावानुवाद किया गया है। यूनानी और लातीनी स्रोतों से भी कुछ सूचनाएँ मिली हैं। लेकिन इन सबसे बढ़कर प्राचीन इमारतों के विशाल खंडहर हैं-विशेषकर अंगकोर और बोरोबुदुर में।

ईसा की पहली शताब्दी से लगभग 900 ईसवी तक उपनिवेशीकरण की चार प्रमुख लहरें दिखाई पड़ती हैं। इनके बीच-बीच में पूरब की ओर जाने वाले लोगों का सिलसिला अवश्य रहा होगा। इन साहित्यिक अभियानों की सबसे विशिष्ट बात यह थी कि इनका आयोजन स्पष्टतः राज्य द्वारा किया जाता था। दूर-दूर तक फैले इन उपनिवेश युद्ध की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थानों पर और महत्वपूर्ण मार्गों पर कायम किए जाते थे। इन बस्तियों का नामकरण पुराने भारतीय नामों के आधार पर किया गया। इस तरह जिसे अब कंबोडिया कहते हैं, उस समय कंबोज कहलाया।

जावा स्पष्ट रूप से 'यवद्वीप' या 'जौ' का टापू है। यह आज भी एक अन्न विशेष का नाम है। प्राचीन पुस्तकों में आए हुए नामों का संबंध भी प्रायः खनिज, धातु या उद्योग या खेती की पैदावार से होता है। इस नामकरण से खुद-ब-खुद ध्यान व्यापार की ओर जाता है।

यह व्यापार ईसा पूर्व तीसरी और दूसरी शताब्दियों में धीरे-धीरे बढ़ गया। इन साहसिक व्यवसायियों और व्यापारियों के बाद धर्म प्रचारकों का जाना शुरू हुआ होगा, क्योंकि यह समय अशोक के ठीक बाद का समय था। संस्कृत की प्राचीन कथाओं से और अरबी दोनों में प्राप्त वृत्तांतों से पता लगता है कि भारत और पूरब के देशों के बीच कम-से-कम ईसा की पहली शताब्दी में नियमित समुद्री व्यापार होता था। यह स्पष्ट है कि प्राचीन भारत में जहाज़ बनाए गए जहाज़ों का कुछ ब्यौरेवार वर्णन मिलता है। बहुत से भारतीय बंदरगाहों का उल्लेख मिलता है। दूसरी और तीसरी शताब्दी के दक्षिण भारतीय (आंध्र) सिक्कों पर दोहरे-पाल वाले जहाजों का चिह्न अंकित है। अजंता के भित्ति चित्रों में लंका-विजय और हाथियों को ले जाते हुए जहाज़ों के चित्र हैं।

महाद्वीप के देशों बर्मा, स्याम और हिंद-चीन पर चीन का प्रभाव अधिक था, टापुओं और मलय प्रायद्वीप पर भारत की छाप अधिक थी। आमतौर पर शासन-पद्धति और सामान्य जीवन-दर्शन चीन ने दिया और धर्म और कला भारत ने।

इन भारतीय उपनिवेशों का इतिहास तकरीबन तेरह सौ साल या इससे भी कुछ अधिक का है- ईसा की पहली या दूसरी शताब्दी से आरंभ होकर पंद्रहवीं शताब्दी के अंत तक।

विदेशों पर भारतीय कला का प्रभाव

भारतीय सभ्यता ने विशेष रूप से दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों में अपनी जड़ें जमाई। इस बात का प्रमाण आज वहाँ सब जगह मिलता है, चंपा, अंगकोर, श्रीविजय, भज्जापहित और दूसरे स्थानों पर संस्कृत के बड़े-बड़े अध्ययन केंद्र थे। वहाँ जिन राज्यों का उदय हुआ उनके शासकों के नाम विशुद्ध भारतीय और संस्कृत नाम हैं। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे विशुद्ध भारतीय थे, पर इसका अर्थ अवश्य है कि उनका भारतीयकरण किया गया था। राजकीय समारोह भारतीय ढंग से संस्कृत में संपन्न किए जाते थे। राज्य के सभी कर्मचारियों के पास संस्कृत की प्राचीन पदवियाँ थीं और इनमें से कुछ पदवियाँ और पदनाम न केवल थाईलैंड में बल्कि मलाया की मुस्लिम

रियासतों में भी अभी तक चले आ रहे हैं। इंडोनेशिया के इन स्थानों के प्राचीन साहित्य भारतीय पुराकथाओं और गाथाओं से भरे हुए हैं। जावा और बाली के मशहूर नृत्य भारत से लिए गए हैं। बाली के छोटे से टापू ने अपनी भाततीय संस्कृति को अभी तक बहुत सीमा तक कायम रखा है, यहाँ तक कि हिंदू धर्म भी वहाँ चला आ रहा है । फिलिपीन द्वीपों में लेखन-कला भारत से ही गई है। कंबोडिया में वर्णमाला दक्षिण भारत से ली गई है और बहुत से संस्कृत शब्दों को थोड़े से हेर-फेर के साथ ले लिया गया है। दीवानी और फ़ौजदारी के कानून भारत के प्राचीन स्मृतिकार मनु को कानूनों के आधार पर बनाए गए हैं और इन्हें बौद्ध प्रभाव के कारण कुछ परिवर्तनों के साथ संहिताबद्ध करके कंबोडिया की आधुनिक कानून व्यवस्था में ले लिया गया है।

लेकिन भारतीय प्रभाव सबसे अधिक प्रकट रूप से प्राचीन भारतीय बस्तियों की भव्य कला और वास्तुकला में दिखाई पड़ता है। इस प्रभाव से अंगकोर और बोरोबुदुर की इमारतें और अद्भुत मंदिर तैयार हुए। जावा में बोरोबुदुर में बुद्ध की जीवन-कथा पत्थरों में उत्कीर्ण है। दूसरे स्थानों पर नक्काशी करके विष्णु, राम और कृष्ण की कथाएं अंकित की गई हैं।

अंगकोरवट के विशाल मंदिर के चारों तरफ़ विशाल खंडहरों का विस्तृत क्षेत्र है। उसमें बनावटी झीलें, पोखरें और नहरें हैं जिनके ऊपर पुल बने हैं और एक बहुत बड़ा फाटक है जिस पर एक वृद्धाकार सिर पत्थर में खुदा है। एक यह आकर्षक मुस्कराता हुआ किंतु रहस्यमय कंबोडियाई देवतुल्य चेहरा है। इस चेहरे की मुस्कान अद्भुत रूप से मोहक और विचलित करने वाली है।

अंगकोर को प्रेरणा भारत से मिली पर उसका विकास ख्मेर प्रतिभा ने किया, या कि दोनों के परस्पर मेल से यह अजूबा पैदा हुआ। कंबोडिया के जिस राजा ने इसे बनवाया उसका नाम जयवर्मन(सप्तम) था, जो ठेठ भारतीय नाम है।

भारतीय कला का भारतीय धर्म और दर्शन से इतना गहरा रिश्ता है कि जब तक किसी को उन आदर्शों की जानकारी न हो जिनसे भारतीय मानस शासित होता है तब तक उसके लिए इसको पूरी तरह सराहना संभव नहीं है। भारतीय कला में हमेशा एक धार्मिक प्रेरणा होती है, एक पारदृष्टि होती है, कुछ वैसी ही जिसने संभवतः यूरोप के महान गिरजाघरों के निर्माताओं को प्रेरित किया था। सौंदर्य की कल्पना आत्मनिष्ठ रूप में की गई है, वस्तुनिष्ठ रूप में नहीं ; वह आत्मा से संबंध रखने वाली चीज़ है, भले ही वह रूप या पदार्थ में भी आकर्षक आकार ग्रहण कर ले। यूनानियों ने सौंदर्य से निस्वार्थ भाव से प्रेम किया। उन्हें सौंदर्य में केवल आनंद ही नहीं मिलता था, वे उसमें सत्य के दर्शन भी करते थे। प्राचीन भारतीय भी सौंदर्य से प्रेम करते थे, पर वे हमेशा अपनी रचनाओं में कोई गहरा अर्थ भरने का प्रयत्न करते थे।

भारतीय कविता और संगीत की तरह कला में भी कलाकार से यह उम्मीद की जाती थी कि वह प्रकृति की सभी मनोदशाओं से तादात्म्य स्थापित करे ताकि वह प्रकृति और विश्व के साथ मनुष्य के मूलभूत सामंजस्य की अभिव्यक्ति कर सके। भारत की विशेषता उसकी मूर्तिकला और स्थापत्य में है, जिस तरह चीन और जापान की विशेषता उनकी चित्रकला में है।

भारतीय संगीत, जो यूरोपीय संगीत से बहुत भिन्न है, अपने ढंग से बहुत विकसित था। इस दृष्टि से भारत का बहुत विशिष्ट स्थान है और संगीत के क्षेत्र में चीन और सुदूर पूर्व के अलावा उसने एशियाई संगीत को बहुत दूर तक प्रभावित किया था।

एशिया के दूसरे देशों की तरह भारत में भी कला के विकास पर, गढ़ी हुई मूर्तियों के विरुद्ध धार्मिक पूर्वाग्रह का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। वेद मूर्ति-पूजा के विरुद्ध थे और बौद्ध धर्म में भी अपेक्षाकृत बाद के समय में ही बुद्ध की मूर्तियाँ और चित्र बनाए जा सके। मधुरा के संग्रहालय मे बोधिसत्व की एक विशाल शक्तिशाली और प्रभावशाली पाषाण प्रतिमा है। इसका निर्माण ईसवी सन् के आरंभ के आसपास कुषाण युग में हुआ था। भारतीय

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

कला अपने आरंभिक काल में प्रकृतिवाद से भरी है, जो कुछ अंशों में चीनी प्रभाव के कारण हो सकता है। भारतीय कला के इतिहास की विभिन्न अवस्थाओं पर चीनी प्रभाव दिखाई पड़ता है।

चौथी से छठी शताब्दी ईसवी में गुप्तकाल के दौरान, जिसे भारत का स्वर्ण युग कहा जाता है, अजंता की गुफ़ाएं खोदी गईं और उनमें भित्ति चित्र बनाए गए। बाग और बादामी की गुफ़ाएँ भी इसी काल की हैं। अजंता हमें किसी स्वप्न की तरह दूर किंतु असल में एकदम वास्तविक दुनिया में ली जाती है। इन भित्ति चित्रों को बौद्ध भिक्षुओं ने बनाया था। बहुत समय पहले उनके स्वामी ने कहा था- स्त्रियों से दूर रहो, उनकी तरफ़ देखो भी नहीं, क्योंकि वे खतरनाक हैं। इसके बावजूद इन चित्रों में स्त्रियों की कमी नहीं है- सुंदर स्त्रियाँ, राजकुमारियाँ, गायिकाएँ, नर्तकियाँ, बैठी और खड़ी, शृंगार करती हुई या शोभा यात्रा में जाती हुई। ये चित्रकार भिक्षु संसार को और जीवन के गतिशील नाटक को कितनी अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने ये चित्र उतने ही प्रेम से बनाए हैं जिनते प्रेम से उन्होंने बोधिसत्व को उनकी शांत, लोकोत्तर गरिमा में चित्रित किया है।

सातवीं-आठवीं शताब्दियों में ठोस चट्टान को काटकर एलोरा की विशाल गुफ़ाएँ तैयार हुईं, जिनके बीच में कैलाश का विशाल मंदिर है। यह अनुमान करना कठिन है कि इंसान ने इसकी कल्पना कैसे की होगी या कल्पना करने के बाद अपनी कल्पना को रूपाकार कैसे दिया होगा। एलीफ़ेंटा की गुफ़ाएँ भी इसी समय की हैं जहाँ प्रभावशाली और रहस्यमयी त्रिमूर्ति बनी है। दक्षिण भारत में महाबलीपुरम् की इमारतों का निर्माण भी इसी समय हुआ था। एलिफ़ेंटा की गुफ़ाओं में नटराज शिव की एक खंडित मूर्ति है, जिसमें शिव नृत्य की मुद्रा में हैं। हैवेल का कहना है कि इस क्षत-विक्षत अवस्था मे भी यह मूर्ति भीमाकार शक्ति का मूर्त रूप है और इसकी कल्पना अत्यंत विशाल है।

ब्रिटिश संग्रहालय में विश्व का सृजन और नाश करते हुए नटाराज शिव की एक और मूर्ति है। एप्सटीन ने लिखा है कि उनकी विशाल लयात्मकता काल के विराट युगों का आह्वान करती है। जावा में बोरीबुदुर से बोधिसत्व का एक सिर कोपेनहेगन के ग्लिपटोटेक ले जाया गया है। रूपगत सौंदर्य की दृष्टि से तो यह सिर सुंदर है ही, इसमें कुछ और गहरी बात है जो बोधिसत्व की शुद्ध आत्मा को इस तरह उद्घाटित करती है जैसे दर्पण में प्रतिबिंब। वह एक ऐसा चेहरा है, जिसमें समुद्र की गहराइयों की प्रशांति, निरभ्र नीले आकाश की स्वच्छता और इंसानी पहुँच से परे का परम सौंदर्य मूर्तिमान हुआ है।

भारत का विदेशी व्यापार

ईसवी सन् के पहले एक हज़ार वर्षों के दौरान, भारत का व्यापार दूर-दूर तक फैला हुआ था और बहुत से विदेशी बाज़ारों पर भारतीय व्यापारियों का नियंत्रण था। पूर्वी समुद्र के देशों में तो उनका प्रभुत्व था ही, उधर वह भूमध्य सागर तक भी फैला हुआ था।

भारत में बहुत प्राचीन काल से कपड़े का उद्योग बहुत विकसित हो चुका था। भारतीय कपड़ा दूर-दूर के देशों में जाता था। रेश्मी कपड़ा भी यहाँ काफ़ी समय से बनता रहा है। लेकिन वह शायद उतना अच्छा नहीं होता था जिनता चीनी रेशम, जिसका आयात यहाँ ई.पू. चौथी शताब्दी से ही किया जाता था। भारतीय रेशम उद्योग ने बाद में विकास किया, लेकिन बहुत नहीं। कपड़े को रँगने की कला में उल्लेखनीय प्रगति हुई और पक्के रंग तैयार करने के खास तरीके खोज निकाली गए। इनमें से एक नील का रंग था, जिसे अंग्रेजी में 'इंडिगो' कहते हैं। यह शब्द इंडिया से बना है और अंग्रेज़ी में यूनान के माध्यम से आया है।

ईसवी सन् की आरंभिक शताब्दियों में भारत में रसायनशास्त्र का विकास और देशों की तुलना में शायद अधिक हुआ था। भारतीय प्राचीन काल से ही फ़ौलाद को ताव देना जानते थे। भारतीय फ़ौलाद को ताव देना जानते थे। भारतीय फ़ौलाद और लोहे की दूसरे देशों में बहुत कद्र की जाती थी, विशेष रूप से युद्ध के कामों में भारतीयों को और बहुत सी धातुओं की भी जानकारी थी और उनका इस्तेमाल किया जाता था। औषधियों के लिए धातुओं

के मिश्रण तैयार किए जाते थे। आसव और भस्म बनाना ये लोग खूब जानते थे। औषध-विज्ञान काफ़ी विकसित था। मध्य-युग तक प्रयोगों में काफ़ी विकास किया जा चुका था, गरचे ये प्रयोग मुख्य रूप से प्राचीन ग्रंथों पर आधारित थे। शरीर-रचना और शरीर-विज्ञान का अध्ययन किया जाता था और हार्वे से बहुत पहले रक्त-संचार की बात सुझाई जा चुकी थी।

खगोलशास्त्र, जो विज्ञानों में प्राचीनतम है, विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रम का नियमित विषय था और फलित ज्योतिष को इससे मिला दिया जाता था। एक निश्चित पंचांग भी तैयार किया गया था जो अब भी प्रचलित है। जो लोग समुद्री-यात्रा पर निकलते थे, उनके लिए खगोलशास्त्र का ज्ञान व्यावहारिक दृष्टि से बहुत सहायक होता था।

यह कहना कठिन है कि उस समय तक यंत्रों ने कितनी प्रगति की थी, लेकिन जहाज़ बनाने का उद्योग खूब चलता था। इसके अलावा, विशेष रूप से युद्ध में काम आने वाली तरह-तरह की मशीनों के हवाले भी मिलते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उस समय भारत औज़ारों के निर्माण एवं प्रयोग में और रसायनशास्त्र एवं धातुशास्त्र संबंधी जानकारी में किसी देश से पीछे नहीं था। इसी कारण कई सदियों तक वह कई विदेशी मंडियों को अपने वश में रख सका।

प्राचीन भारत में गणितशास्त्र

यह माना जाता है कि आधुनिक अंकगणित और बीजगणित की नींव भारत में ही पड़ी थी। गिनती के चौखटे को इस्तेमाल करने की फूहड़ पद्धति, रोमन और उसी तरह की संख्याओं के इस्तेमाल ने बहुत समय तक प्रगति में बाधा दी, जबकि शून्यांक मिलाकर दस भारतीय संख्याओं ने मनुष्य की बुद्धि को इन बाधाओं से बहुत पहले मुक्त कर दिया था और अंकों के व्यवहार पर अत्यधिक प्रकाश डाला था। ये अंक चिह्न बेजोड़ थे और दूसरे देशों में प्रयोग किए जाने वाले तमाम चिह्नों से एकदम भिन्न थे।

भारत में ज्यामिति, अंकगणित और बीजगणित का आरंभ बहुत प्राचीन काल में हुआ था। शायद आरंभ में वैदिक वेदियों पर आकृतियाँ बनाने के लिए एक तरह के ज्यामितीय बीजगणित का प्रयोग किया जाता था। हिंदू संस्कारों में ज्यामितिक आकृतियाँ अब भी आमतौर पर काम में लाई जाती हैं। भारत मे ज्यामिति का विकास अवश्य हुआ पर इस क्षेत्र में यूनान और सिकंदरिया आगे बढ़ गए। अंकगणित और बीजगणित में भारत आगे बना रहा। जिसे 'शून्य' या 'कुछ नहीं' कहा जाता है वह आरंभ में एक बिंदी या नुक्ते की तरह था। बाद में उसने एक छोटे वृत्त का रूप धारण कर लिया। उसे किसी भी और अंक की तरह एक अंक समझा जाता था।

शून्यांक और स्थान-मूल्य वाली दशमलव विधि को स्वीकार करने के बाद अंकगणित और बीजगणित में तेजी से विकास करने की दिशा में कपाट खुल गए। बीजगणित पर सबसे प्राचीन ग्रंथ ज्योतिर्विद आर्यभट्ट का है, जिनका जन्म 427 ई. में हुआ था। भारतीय गणितशास्त्र में अलगा महत्वपूर्ण नाम भास्कर (522 ई.) का और उसके बाद ब्रह्मपुत्र (628 ई.) का है। ब्रह्मपुत्र प्रसिद्ध खगोलशास्त्री भी था जिसने शून्य पर लागू होने वाले नियम निश्चित किए और इस क्षेत्र में और अधिक उल्लेखनीय प्रगति की। इसके बाद अंकगणित और बीजगणित पर लिखने वाले गणितज्ञों की परंपरा मिलती है। इनमें अंतिम महान नाम भास्कर द्वितीय का है, जिसका जन्म 1114 ई. में हुआ था। उसने खगोलशास्त्र, बीजगणित और अंकगणित पर क्रमशः तीन ग्रंथों की रचना की। अंकगणित पर उनकी पुस्तक का नाम **लीलावती** है, जो स्त्री का नाम होने का कारण गणित की पुस्तक के लिए विचित्र लगता है। विश्वास किया जाता है कि लीलावती भास्कर की पुत्री थी गोकि इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। पुस्तक की शैली सरल और स्पष्ट है और छोटी उम्र के लोगों की समझ के लिए उपयुक्त है। इस पुस्तक का संस्कृत विद्यालयों में अब भी कुछ हद तक अपनी शैली के कारण इस्तेमाल किया जाता है। आठवीं शताब्दी में खलीफ़ा अल्मंसूर के राज्यकाल में (753-774 ई.) कई भारतीय विद्वान बगदाद गए और अपने साथ वे जिन पुस्तकों को ले गए उनमें

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

खगोलशास्त्र और गणित की पुस्तकें थीं। इन्होंने अरबी जगत में गणित शास्त्र और ज्योतिषशास्त्र के विकास को प्रभावित किया और वहाँ भारतीय अंक प्रचलित हुए। बगदाद उस समय विद्याध्ययन का बड़ा केंद्र था और यूनानी और यहूदी विद्वान वहाँ एकत्र होकर अपने साथ यूनानी दर्शन, ज्यामिति और विज्ञान ले गए थे। मध्य एशिया से स्पेन तक सारी इस्लामी दुनिया पर बगदाद का सांस्कृतिक प्रभाव महसूस किया जा रहा था और अरबी अनुवादों के माध्यम से भारतीय गणित का ज्ञान इस व्यापक क्षेत्र में फैल गया था।

अरबी जगत से नया गणित, संभवतः स्पेन के मूर विश्वविद्यालयों के माध्यम से यूरोपीय देशों में पहुँचा और इससे यूरोपीय गणित की नींव पड़ी। यूरोप में इन नए अंकों का विरोध हुआ और इनके आमतौर पर प्रचलन में कई सौ वर्ष लग गए। इनका सबसे पहला प्रयोग, जिसकी जानकारी मिलती है, 1134 ई. में सिसली के एक सिक्के में हुआ। ब्रिटेन में इसका पहला प्रयोग 1490 ई. में हुआ।

विकास और ह्रास

ईसवीं सन् के पहले हज़ार वर्षों में, भारत में आक्रमणकारी तत्वों और आंतरिक झगड़ों के कारण बहुत उतार-चढ़ाव आए। फिर भी यह समय ऊर्जा से उफनता और सभी दिशाओं में अपना प्रसार करते हुए कर्मठ राष्ट्रीय जीवन का समय रहा है। ईरान, चीन, यूनानी जगत, मध्य एशिया से उसका संपर्क बढ़ता है और इस सबसे बढ़कर पूर्वी समुद्रों की ओर बढ़ने की शक्तिशाली प्रेरणा पैदा होती है। परिणामस्वरूप भारतीय उपनिवेशों की स्थापना और भारतीय सीमाओं को पार कर दूर-दूर तक भारतीय संस्कृति का प्रसार होता है। इन हज़ार वर्षों के बीच के समय में यानी चौथी शताब्दी के आरंभ से लेकर छठी शताब्दी तक गुप्त साम्राज्य समृद्ध होता है। यह भारत का स्वर्ण युग कहलाता है। इस युग के संस्कृत साहित्य में एक प्रकार की प्रशांति, आत्मविश्वास और आत्माभिमान की दीप्ति और उमंग दिखाई पड़ती है।

स्वर्ण-युग के समाप्त होने से पहले ही कमज़ोरी और ह्रास के लक्षण भी प्रकट होने लगते हैं। उत्तर-पश्चिम से गोरे हूणों के दल के दल आते हैं और बार-बार वापस खदेड़ दिए जाते हैं। किंतु धीरे-धीरे वे उत्तर-भारत में अपनी राह बना लेते हैं और आधी शताब्दी तक पूरे उत्तर में अपने को राज-सत्ता के रूप में प्रतिष्ठित कर लेते हैं। इसके बाद, अंतिम गुप्त सम्राट मध्य-भारत के एक शासक यशोवर्मन के साथ मिलकर, बहुत प्रयत्न करके हूणों को निकाल बाहर करता है।

इस लंबे संघर्ष ने भारत को राजनीतिक और सैनिक दोनों दृष्टियों से दुर्बल बना दिया। हूणों के उत्तर भारत में बस जाने के कारण लोगों में धीरे-धीरे एक अंदरूनी परिवर्तन घटित हुआ। हूणों के पुराने वृत्तांत कठोरता और बर्बर व्यवहार से भरे पड़े हैं। ऐसा व्यवहार जो युद्ध और शासन के भारतीय आदर्शों से एकदम भिन्न हैं।

सातवीं शताब्दी में हर्ष के शासनकाल में उज्जयिनी (आधुनिक उज्जैन), जो गुप्त शासकों की शानदार राजधानी थी, फिर से कला, संस्कृति और एक शक्तिशाली साम्राज्य का केंद्र बनती है। लेकिन आने वाली सदियों में वह भी कमज़ोर पड़कर धीरे-धीरे खत्म हो जाती है। नौवीं शताब्दी में गुजरात का मिहिर भोज उत्तर और मध्य भारत में छोटे राज्यों को मिलाकर एक संयुक्त राज्य कायम करके कन्नौज को अपनी राजधानी बनाता है। एक बार फिर साहित्यिक पुनर्जागरण होता है जिसके प्रमुख व्यक्तित्व राजशेखर हैं। ग्यारहवीं शताब्दी के आरंभ में एक बार फिर, एक दूसरा भोज सामने आता है जो बहुत पराक्रमी और आकर्षक है और उज्जयिनी फिर एक बड़ी राजधानी बनती है। यह भोज बड़ा अद्भुत व्यक्ति था जिसने अनेक क्षेत्रों में प्रतिष्ठा हासिल की। वह वैयाकरण और कोशकार था। साथ ही उसकी दिलचस्पी भेषज और खगोलशास्त्र में थी। उसने इमारतों का निर्माण कराया और कला एवं साहित्य का संरक्षण किया। वह स्वयं कवि और लेखक था जिसके नाम से कई रचनाएँ मिलती हैं। उसका नाम महानता, विद्वता और उदारता के प्रतीक के रूप में लोक-कथाओं और किस्सों का हिस्सा बन गया।

इन तमाम चमकदार टुकड़ों के बावजूद एक भीतरी कमज़ोरी ने भारत को जक़ड़ रखा है, जिससे उसकी

राजनीतिक प्रतिष्ठा ही नहीं, बल्कि उसके रचनात्मक क्रियाकलाप भी प्रभावित होते दिखाई पड़ते हैं। यह प्रक्रिया बहुत धीमी गति से चलती रही और इसने दक्षिण भारत की तुलना में उत्तर भारत को जल्द प्रभावित किया। वस्तुतः दक्षिण, आक्रमणकारियों के लगातार हमलों का मुकाबला करने के दबाव से बचा रहा। उत्तर भारत की अनिश्चित स्थिति से बचाव के लिए बहुत से लेखक, कलाकार और वास्तुशिल्पी दक्षिण में जाकर बसे गए। दक्षिण के शक्तिशाली राज्यों ने इन लोगों को रचनात्मक कार्य के लिए ऐसा अवसर दिया होगा जो उन्हें दूसरी जगह नहीं मिला।

गरचे उत्तरी भारत छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था, पर जीवन वहाँ समृद्ध था और वहाँ कई केंद्र सांस्कृतिक और दार्शनिक दृष्टि से सक्रिय थे। हमेशा की तरह बनारस धार्मिक और दार्शनिक विचारों का गढ़ था। लंबे समय तक कश्मीर भी बौद्धों और ब्राह्मणों के संस्कृत-ज्ञान का बहुत बड़ा केंद्र रहा। भारत में बड़े-बड़े विश्वविद्यालय रहे। इनमें सबसे प्रसिद्ध नालंदा था, जिसके विद्वानों का पूरे भारत में आदर किया जाता था। यहाँ चीन, जापान और तिब्बत से विद्यार्थी आते थे, बल्कि कोरिया, मंगोलिया और बुखारा से भी। धार्मिक और दार्शनिक विषयों (बाद्ध और ब्राह्मण दोनों के अनुसार) के अलावा दूसरे विषयों की शिक्षा भी दी जाती थी। कला और वास्तुशिल्प के विभाग थे, वैद्यक का विद्यालय था, कृषि विभाग था, डेरी फार्म था और पशु थे। विदेशों में भारतीय संस्कृति का प्रसार ज़्यादातर नालंदा के विद्वानों ने किया है।

इसके अलावा बिहार में आजकाल के भागलपुर के पास विक्रमशिला और काठियावाड़ में वल्लभी विश्वविद्यालय थे। गुप्त शासकों के समय में उज्जयिनी विश्वविद्यालय का उत्कर्ष हुआ। दक्षिण में अमरावती विश्वविद्यालय था। ज्यों-ज्यों सहस्राब्दी समाप्ति पर आती है यह सब सभ्यता के तीसरे पहर जैसा लगने लगता है। दक्षिण में अब भी तेजस्विता और शक्ति शेष थी और वह कुछ और शताब्दियों तक बनी रही। पर ऐसा लगता था जैसे हृदय स्तंभित हो चला हो, उनकी धड़कनें मंद होने लगी हों। आठवीं शताब्दी में शंकर के बाद कोई महान दार्शनिक नहीं हुआ। शंकर भी दक्षिण भारतीय थे। ब्राह्मण और बौद्ध दोनों धर्मों का ह्रास होने लगता है और पूजा के विकृत रूप सामने आने लगते हैं, विशेषकर तांत्रिक पूजा और योग-पद्धति के भ्रष्ट रूप।

साहित्य में भवभूति (आठवीं शताब्दी) आखिरी बड़ा व्यक्ति था। गणित में आखिरी बड़ा नाम भास्कर द्वितीय (बारहवीं शताब्दी) का है। काल में ई.वी. हैवेल के अनुसार सातवीं या आठवीं शताब्दी से चौदहवीं शताब्दी तक भारतीय कला का महान युग था। यही समय यूरोप में गाथिक कला के चरम विकास का समय था। प्राचीन भारतीय कला की रचनात्मक प्रवृत्ति का ह्रास स्पष्ट रूप से सोलहवीं शताब्दी में होने लगा। मेरा खयाल है कला के क्षेत्र में भी उत्तर की अपेक्षा दक्षिण भारत में ही पुरानी परंपरा ज़्यादा लंबे समय तक कायम रही।

उपनिवेशों में बसने के लिए आखिरी बड़ा दल दक्षिण से नवीं शताब्दी में गया था, लेकिन दक्षिण के चोलवंशी ग्यारहवीं शताब्दी में तब तक एक बड़ी समुद्री शक्ति बने रहे जब तक उन्हें श्रीविजय ने परास्त करके उन पर विजय नहीं प्राप्त कर ली।

समय के साथ भारत क्रमशः अपनी प्रतिभा और जीवन-शक्ति को खोता जा रहा था। यह प्रक्रिया बहुत धीमी थी और कई सदियों तक चलती रही। इसका प्रारंभ उत्तर में हुआ और अंत में यह दक्षिण पहुँच गई। इस राजनीतिक पतन और सांस्कृतिक गतिरोध के कारण क्या थे? राधाकृष्णन का कहना है कि भारतीय दर्शन ने अपनी शक्ति राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ खो दी।

यह सही है कि राजनीतिक स्वतंत्रता खो जाने से सांस्कृतिक ह्रास अनिवार्य रूप से शुरू हो जाता है। लेकिन राजनीतिक स्वतंत्रता तभी छिनती है जब उससे पहली किसी तरह का ह्रास शुरू हो जाता है। भारत जैसा विशाल अति विकसित और अत्यंत सभ्य देश बाह्य आक्रमण के सामने तभी हार मानेगा जब या तो भीतर से खुद पतनशील हो या आक्रमणकारी युद्धकौशल में उससे आगे हो। भीतरी ह्रास भारत में इन हज़ार बर्षो के अंत मे बिलकुल स्पष्ट दिखाई पड़ता है।

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

हर सभ्यता के जीवन में ह्रास और विघटन के दौर बार-बार आते हैं पर भारत ने उनसे बचकर नए सिरे से अपना कायाकल्प कर लिया। उसमें एक ऐसा सक्रिय अंतस्तल रहा जो नए संपर्कों से अपने को हमेशा ताज़ा रूप देकर फिर से अपना विकास करता रहा- कुछ इस रूप में हमेशा से व्यवहार में रूढ़िवादिता और विचारों में विस्फोट का विचित्र संयोग रहा है।

सभ्यताओं के ध्वस्त होने के हमारे सामने बहुत से उदाहरण हैं। इनमे सबसे उल्लेखनीय उदाहरण यूरोप की प्राचीन सभ्यता का है जिसका अंत रोम के पतन के साथ हुआ।

भारतीय सभ्यता का ऐसा नाटकीय अंत न उस समय हुआ और न बाद में, किंतु उत्तरोत्तर पतन साफ़ दिखाई पड़ता है। शायद यह भारतीय समाज-व्यवस्था के बढ़ते हुए कट्टरपन और गैरमिलनसारी का अनिवार्य परिणाम था जिसे यहाँ की जाति-व्यवस्था में देखा जा सकता है। जहाँ भारतीय विदेश चले गए, जैसे दक्षिण पूर्वी एशिया में वहाँ उनकी मानसिकता, रीति-रिवाज और अर्थव्यवस्था किसी में इतना कट्टरपन दिखाई नहीं पड़ता। अगले चार-पाँच सौ वर्ष तक वे इन उपनिवेशों में फले-फूले और उन्होंने तेजस्विता और रचनात्मक शक्ति का परिचय दिया। स्वयं भारत में गैरमिलनसारी की भावना ने उनकी रचनात्मकता को नष्ट कर दिया। जीवन निश्चित चौखटों में बँट गया, जहाँ हर आदमी का धंधा स्थायी और नियत हो गया। देश की सुरक्षा के लिए युद्ध करना क्षत्रियों का काम हो गया। ब्राह्मण और क्षत्रिय वाणिज्य-व्यापार को नीची नज़र से देखते थे। नीची जाति वालों को शिक्षा और विकास के अवसरों से वंचित रखा गया और उन्हें अपने से ऊँची जाति के लोगों के अधीन रहना सिखाया गया।

भारत के सामाजिक ढाँचे ने भारतीय सभ्यता को अद्‌भुत दृढ़ता दी थी। उसने गुटों को शक्ति दी और उन्हें एकजुट किया, लेकिन यह बात बृहत्तर एकता और विकास के लिए बाधक हुई। इसने दस्तकारी, शिल्प, वाणिज्य और व्यापार का विकास किया, लेकिन हमेशा अलग-अलग समुदायों के भीतर। इस तरह खास ढंग के धंधे पुश्तैनी बन गए और नए ढंग के कामों से बचने और पुरानी लकीर पीटते रहने की प्रवृत्ति पैदा हुई। इससे बड़ी संख्या में लोगों को विकास के अवसरों से वंचित करते हुए, उन्हें स्थायी रूप से समाज की सीढ़ी में नीचा दर्जा देकर यह मूल्य चुकाया गया।

इसी कारण हर तरफ़ ह्रास हुआ- विचारों में, दर्शन में, राजनीति में, युद्‌ध की पद्‌धति में, बाहरी दुनिया के बारे में जानकारी और उसके साथ संपर्क में। साथ ही क्षेत्रीयता के भाव बढ़ने लगे, भारत की अखंडता की अवधारणा के स्थान पर सामंतवाद और गिरोहबंदी की भावनाएँ बढ़ने लगीं और अर्थव्यवस्था संकुचित हो गई। इसके बावजूद जीवनी शक्ति और अद्‌भुत दृढ़ता बची हुई थी और इसके साथ लचीलापन एवं अपने को ढालने की क्षमता। इसीलिए वह बचा रह सका, नए संपर्कों एवं विचारधाराओं का लाभ उठा सका और कुछ दिशाओं में प्रगति भी कर सका, लेकिन यह प्रगति अतीत के बहुत से अवशेषों से जकड़ी रही और बाधित होती रही।

प्रश्न-

1. गुप्तकाल के बारे में आप क्या जानते हैं?
2. भारत के सम्मुख सबसे बड़ी समस्या विदेशी आक्रमण की रही है। स्पष्ट कीजिए।
3. भारत में शांतिपूर्ण विकास को अधिक महत्व दिया गया। स्पष्ट कीजिए।
4. प्राचीन भारत में भारतीय व्यापार की स्थिति पर प्रकाश डालिए।
5. भारत के प्राचीन रंगमंच के बारे में बताइए।
6. संस्कृत भाषा का भारतीय संस्कृति में क्या महत्व है?
7. विदेशों पर भारतीय कला का क्या प्रभाव पड़ा?
8. प्राचीन भारत में गणितशास्त्र की स्थिति कैसी थी?

शब्दकोश

इस शब्दकोश से आपको इस पुस्तक के पाठों के कठिन शब्दों के अर्थ समझने में सहायता मिलेगी। नीचे बाईं ओर कठिन शब्द तथा दाईं ओर उसका अर्थ दिया गया है।

कहीं-कहीं शब्दों के अनेक पर्याय भी दिए गए हैं। इससे आप प्रसंग के अनुसार अनुकूल शब्द का चयन करना सीख सकेंगे। यह शब्दकोश आपको शब्दों के न केवल सही अर्थ जानने में मदद करेगा अपितु शब्दों की सही वर्तनी भी सिखाएगा।

शब्द का अर्थ देने से पहले मूल शब्द के बाद कोष्ठक में एक संकेताक्षर दिया गया है। व्याकरण की दृष्टि से कोई शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया आदि शब्दों में से किस भेद का है, यह सूचना आपको इस संकेताक्षर से मिलेगी। यहाँ जो संकेताक्षर अथवा संक्षिप्त रूप प्रयुक्त हुए हैं, वे इस प्रकार हैं-

अ.	–	अव्यय	अ. क्रि.	–	अकर्मक क्रिया
क्रि.	–	क्रिया	क्रि. वि.	–	क्रिया विशेषण
पु.	–	पुल्लिंग	फा.	–	फारसी
मु.	–	मुहावरा	वि.	–	विशेषण
सं	–	संज्ञा	स.क्रि.	–	सकर्मक क्रिया
सर्व.	–	सर्वनाम	स्त्री.	–	स्त्रीलिंग

इस शब्दकोश में अपेक्षित शब्द का अर्थ ढूँढ़ना शुरू करने से पहले यह उचित होगा कि शब्दकोश देखने की सही विधि आप जान लें। इसके लिए नीचे लिखे बिंदुओं को ध्यान में रखना होगा-

- जिस शब्द के बारे में जानकारी प्राप्त करनी है, उसके प्रारंभ का वर्ण देखा जाता है। उसके आधार पर ही शब्द ढूँढ़ा जाता है।
- शब्दकोश में शब्दों को इस वर्ण-अनुक्रम में दिया जाता है- **अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ** के पश्चात् **क** से **ह** तक के सही वर्ण क्रम के अनुसार।
- **क्ष, त्र, ज्ञ** को **ह** के बाद नहीं ढूँढ़ना चाहिए। **क्ष, क्** और **ष** का संयुक्त रूप है। अतः **क** से शुरू होने वाले शब्दों के समाप्त होने पर **क्ष** से प्रारंभ होने वाले शब्द देखे जा सकते हैं।
- **त्र, त्** और **र** का संयुक्त रूप है। अतः **त्र** से शुरू होने वाले शब्द **त** से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़े जाने चाहिए। **त्य** से संबंधित शब्द जब समाप्त हो जाते हैं तब **त्र** से आरंभ होनेवाले शब्द देखे जा सकते हैं।
- **ज्ञ, ज्** और **ञ** का संयुक्त रूप है। अतः **ज्ञ** से शुरू होने वाले शब्दों को **ज** से शुरू होने वाले शब्दों के बाद ही ढूँढ़ना चाहिए। **ज** से संयुक्त होकर बनने वाला पहली वर्ण **ज्ञ** ही है। अतः जौहरी के बाद ही **ज्ञ** से बनने वाले शब्द देखे जा सकते हैं। **ज्ञ** के बाद **ज्य** से बनने वाले शब्द आते हैं।

© SCERT not to be republished

आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा निशुल्क वितरण

शब्दार्थ

अंत्येष्टि – स्त्री.(सं) मृतक कमी, दाह कर्म
अकबकाना – वि. भौंचक्का होना, घबराना
अजीबो-रीब – वि. अनोखा
अपन – सर्व. अपना
असीम – वि. जिसकी कोई सीमा न हो, अपार
अहमियत – वि. (अ.) महत्व
आँकना –ह्रक्रि. अनुमान लगाना
आपा – पु.(सं.) अहं
आलम – पु.(अ.) दुनिया, माहौल
आलीशान – (वि.) शानदार
आवाजाहीह्र – (स्त्री.) आना-जाना, आवागमन
आहि – अ.क्रि. है
इत्ते-सारे – वि. इतने सारे
ईज़ाद – क्रि. खोज, अन्वेषण
उजरत – वि.(अ.) मजदूरी, मेहनत का बदला, पारिश्रमिक
उजागर – वि. प्रकट करना
उपानह – पु. जूता
एसएमएस – अ. लघु संदेश सेवा
कर – पु.(सं.) हाथ
कसर –स्त्री.(अ.) घाटा पूरा करना, कमी
काढ़त –अ. क्रि. बाल बनाना
किरदार –पु. अभिनेता की भूमिका, चरित्र
कुमक –स्त्री.(फा.) फौजी टुकड़ी
कोर्ट मार्शल –पु. फौजी अदालत
खपत –स्त्री. माल की बिक्री, आपूर्ति
खमा –स्त्री. क्षमा
खयाल –पु.(फा.) विचार
खिताब –पु.(अ.) उपाधि, सम्मान
खुराफाती –वि. शरारती
खोंते –पु. घोंसले
गंतव्य –वि.(सं.) स्थान जहाँ किसी का जाना हो
गफश –वि. गफ्स, घना बुना हुआ
गात –पु. शरीर
गारी –स्त्री. गाली, अपशब्द
गुडविल –अ. सुनाम, अच्छी छवि
गुहत –स.क्रि. गूँथना
गोता – पु.(अ.) पानी में डूबना
गोरस – पु. दूध, दही मक्खन, घी आदि
घमासान – पु. घोर, भयानक
घिसीपिटी – वि. जो बहुत दिनों से चली आ रही, पुरानी
घूरा – पु. कूड़े-करकट का ढेर
चकिसों – वि. चकित, विस्मित
चाम – पु. त्वचा, चमड़ा
चाव – पु. चाह, तीव्र इच्छा
चारपाई – स्त्री. खाट, छोटा पलंग
चिहाकर – स.क्रि. चौंककर, चकित होकर
जायजा – पु.(अ.) जाँच-परख
जुगाड़ – पु. उपाय
जुरत (जुरअत) – स्त्री. बहादुरी, साहस
जुरतो (जुरत) – अ.क्रि. जुटना, एकत्र होना, प्राप्त होना
जोए – पु. ढूँढ़ना, देखना, खोजना
जोटी – स्त्री. जोड़ी
झँगा – पु. ढीला कुरता
झुटपुटा – पु. सबेरे या शाम का समय जब प्रकाश इतना कम हो कि कोई चीज़ साफ़ दिखाई न दे, वह समय जब कुछ-कुछ अँधेरा और कुछ-कुछ उजाला हो
टहलुआ –पु. नौकर
डलिया – स्त्री. बाँस का बना एक छोटा पात्र
डामलफाँसी –पु. आजीवन कारावास का दंड, देश निकाला
डिस्क फॉर्म –रिकॉर्डिंग का एक रूप
ढरकी –स्त्री. कपड़ा बुनते हुए जुलाहे जिससे बाने का सूत फेंकते हैं, भरनी
ढँढोरि –स.क्रि. ढूँढ़ना
ढाँणी –स्त्री. (सं.) अस्थायी निवास, कच्चे मकानों की बस्ती जो गाँव से कुछ दूर बनी हो

© SCERT not to be republished

ढाँढ़स – पु. दिलासा, धीरज
ढोपा – पु. लड़का
तंद्रालस – स्त्री. (सं.), वि.(सं.) नींद से अलसाया हुआ
तनख्वाह – स्त्री. (फा.) वेतन, पगार
तरकारी – स्त्री. सब्जी
तह – स्त्री. (फा.) गहराई
ताउम्र – प्र.(सं.) स्त्री.(अ.) उम्र भर
दड़बे – पु. मुर्गियों के रहने की जगह
दबीज – वि. (फा.)मोटा, मजबूत
दबैल – वि. दब्बू
दस्तावेज़ – स्त्री.(फा.) प्रमाण संबंधी कागजात, प्रमाण पत्र
दहुँ – पु. दस
दालान – पु. बरामदा
दुपटी – स्त्री. अंगोछा, गमछा
दुहेली – स्त्री. दुख, दुख में पड़ा हुआ, कष्ट साध्य
दिसि – स्त्री. दिशा
द्विज – पु.(सं.) ब्राह्मण
धर्मभीरु – पु.(वि.) जिसे धर्म छूटने का भय हो, अधर्म से डरने वाला
धींगा-मुश्ती – वि.(स्त्री.)धक्का-मुक्की, लड़ना-भिड़ना, शरारत
धुआँधार – पु.(वि.) ताबड़तोड़
नगीना – सं.(पु.) नग, रत्न
नफासत – स्त्री. सज्जा, सजा-सँवरा
न्योता – पु. निमंत्रण
नाजुक – वि. (फा.) कोमल
नायाब – वि. बहुमूल्य, बेशकीमती
निद्रित – वि.(सं.) सोया हुआ
निमित्त – पु.(सं.) कारण
पखने – पु. पंख
पगड़ी – स्त्री. सिर पर लपेटकर बाँधा जाने वाला लम्बा कपड़ा
पगा – पु. पगड़ी
पचि-पचि – पु. बार-बार
पटकथा – पु. फिल्म के लिए लिखी जाने वाली कहानी
पठवनि – स.क्रि. भेजना, विदाई
पनही – स्त्री.जूता
परात – स्त्री. थाली की तरह का पीतल आदि धातु से बना एक बड़ा और गहरा बरतन
पर्दाफ़ाश – पु. भेद खोलना, दोष प्रकट करना
पाँख – पु. पंख, पर
पाखी – पु. पक्षी. चिड़िया
पाछिली – वि. पिछला
पात – पु. पत्ता
पार्श्वगायक – वि.(सं.), पु.(सं.) पर्दे के पीछे से गाने वाला
पैतृक – वि.(सं.) पूर्वजों का, पिता से प्राप्त
प्रत्यूष – पु.(सं.) प्रातःकाल, भोर
प्रयाण – पु.(सं.) प्रस्थान, मरना
प्रशस्ति पत्र – स्त्री.(सं.) पु. प्रशंसा पत्र
फक्त – वि.(अ.) केवल
फबना – अ.क्रि. सजना, शोभा देना
फब्ती – स्त्री. चोट करने वाली या चुभती बात
फरमान – पु.(फा.) राजाज्ञा
फिकर – स्त्री. चिंता, फिक्र
फैंटेसी – वि. काल्पनिक
फोकट – वि. मूल्यरहित, मुफ्त
बटालियन – स्त्री.(सं.) पलटन
बाँचना – स.क्रि. पढ़ना, अवलोकन करना
बियाबान – पु. जंगल, उजाड़खंड, निर्जन
बिलोकना – स.क्रि. देखना, अवलोकन करना
बिवाइन – स्त्री. पाँव की ऐड़ी का फटना
बेगार – स्त्री.(फा) बिना मजदूरी का काम
बेनी – स्त्री.(सं.) चोटी
बैरी – पु. दुश्मन
भगोने-डोंगे – पु. भोजन पकाने के बर्तन
भिनसार – पु. प्रातःकाल, सवेरा
भुई – स्त्री.(सं.) पृथ्वी, भूमि
मिचया – स्त्री. बैठने के उपयोग में आने वाली सुतली से बुनी छोटी/चौकोर खाट
मनुहार – पु. मनाना
मरहम-पट्टी – पु.(अ.) स्त्री. जख्म का इलाज, घाव पर दवा लगाकर पट्टी बाँधना

© SCERT not to be republished

मल्लार – पु.(अ.) मल्हार, संगीत का एक राग
मशगूल – वि.(अ.) व्यस्त
महावत – पु. हाथीवान
मातम – पु. (अ.) शोक मनाना
मानि – वि.(फा.) जैसा, अनुरूप, सरीखा
मामूल – वि.(अ.) वह बात जो रोज की जाए, हमेशा की तरह
मुँगरी – सं. गोल, मुठियादार लकड़ी जो ठोकने-पीटने के काम आती है
मुँडेर – पु.(सं.) छत के आस-पास बनाई जाने वाली दीवार
मुखातिब – वि.(अ.) देखकर बात करना
मुलुक – पु. मुल्क, देश
मुस्तैद – वि. तत्पर, तैयार रहना
म्यान – पु. (फा.) तलबार रखने का कोष
मोरी – स्त्री. नाली, गंदे पानी की नाली
यकीन – पु.(अ.) विश्वास
लगुए-भगुए – वि. पीछे चलने वाले, मेल-जोल के व्यक्ति
लटजीरा – पु. चिचड़ा, एक पौधा
लटी – स्त्री. लटकी हुई, लटकना
लथपथ – वि. सना हुआ, तर
लफड़ा – पु. उलझन, झंझट
लवाजिमा – पु.(अ.) यात्रा आदि में साथ रहने वाला सामान
लशकरी – पु.(फा.) पलटन, सेना
लस्टम-पश्टम – अ. अंट-शंट, अव्यस्थित रूप
लोटी – क्रि. लोटने वाली
वर्णनातीत – वि. जिसका वर्णन न किया जा सके
वसुधा – स्त्री. पृथ्वी
वाकई – क्रि. वि. बिलकुल, सचमुच
वस्तु विनिमय – पु. (सं.) पैसों से न खरीदकर एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु लेना
शिखर – पु. पहाड़ की चोटी
संवाद – पु.(सं.) फिल्म में की जाने वाली बातचीत
सकत – स्त्री. शक्ति, सामर्थ्य
सरापा – अ.(फा.) सिर से पाँव तक पहना जाने वाला वस्त्र
सलाख – स्त्री. सलाई, धातु की छड़
सवाक् फिल्म – पु.(सं) मूक फिल्म के बाद बनी बोलती फिल्म
साँसत – कठिनाई में पड़ना, बड़ा कष्ट
सांगोपांग – वि.(सं.) पूरी तरह, ऊपर से नीचे तक
सिटपिटाना – अ.क्रि. भय या घबड़ाहट से सहम जाना
सिलसिला – वि. संबंध, कड़ी
सिवा – अ. (अ.) सिवाय, अलावा, अतिरिक्त
सींके – पु. छींका जिस पर दूध-दही आदि रखा जाता है
सुमिरन – क्रि. ईश्वर के नाम का जप (भक्ति का एक प्रकार), स्मरण
सुहावत – वि. सुंदर/भला, सुहाना लगना
सेंत-मेंत का काम – स्त्री.(अ.) वह काम जिसके लिए कुछ देना न पड़ा हो, बिना लाभ का काम
सौरभ – पु. सुगंध, सुबास
स्वच्छंद – पु. अपनी इच्छा के अनुसार चलने वाला
हटकि – स्त्री. मनाही
हरकारा – पु. दूत, डाकिया, संदेश पहुँचाने वाला
हरि-हलधर – पु.(सं.) कृष्ण-बलराम
हस्ती – वि.(सं.) अस्तित्व
हवाला – पु.(सं.) उल्लेख करना, उद्धरण
हुलस – अ. क्रि. उल्लास
हुनरमंद – पु. (फा.) वि.कुशल, गुणी कारीगर
हैसियत – स्त्री. (सं.) दरजा
हौले से – अ. धीरे से

© NCERT not to be republished